राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस

हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

मध्यप्रदेश | राजस्थान | हरियाणा | छत्तीसगढ़ | महाराष्ट्र से प्रकाशित

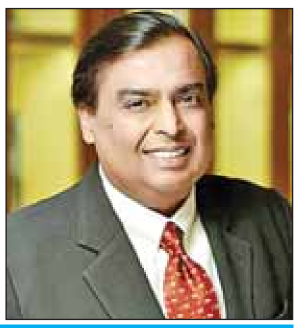

डाक पंजीयन क्रं. 173/15-17

5 मेसी 14 साल बाद भारत में फ्रेंडली मैच खेलेंगे | सम्पादकीय | इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले पर... | हुरुन रिच लिस्ट : मुकेश अंबानी देश में... 5

वर्ष 19 ● अंक 71 ई-पेपर के लिए लॉगइन करें -www.hindustanexpress.online | ग्वालियर, शुक्रवार 28 मार्च 2025 | email - hindustanexpressbhopal@gmail.com | मूल्य 2.00 रुपया, पृष्ठ 8

इस साल भारत आएंगे ब्लादिमिर पुतिन

यूक्रेन वॉर के बाद पहली भारत यात्रा, रूसी विदेश मंत्री बोले- तैयारियां की जा रहीं

आर.एन.एस

नई दिल्ली। रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन इस साल भारत आएंगे। रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा कि राष्ट्रपति के विजिट के लिए तैयारियां की जा रही हैं। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि यह यात्रा किस महीने या तारीख को हो सकती है।

लावरोव ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री चुने जाने के बाद रूस की अपनी पहली विदेश यात्रा की है। अब हमारी बारी है। राष्ट्रपति व्लादिमीर

पुतिन ने भारतीय सरकार का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है।

रूसी विदेश मंत्री ने यह बयान %रूस और भारत~ एक नए द्विपक्षीय एजेंडे की ओर समिट के दौरान दिया है। इस बैठक का आयोजन रूसी अंतरराष्ट्रीय मामलों की परिषद ने किया। आखिरी बार 2021 में भारत आए थे पुतिन रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने 06 दिसंबर 2021 में भारत की यात्रा की थी। वह सिर्फ 4 घंटे के लिए भारत आए थे। इस दौरान भारत और रूस के बीच 28 समझौते पर दस्तखत हुए थे। इसमें मिलिट्री और तकनीकी समझौते थे। दोनों देशों ने 2025 तक 30 अरब डॉलर (2 लाख 53 हजार करोड़ रुपए) सालाना ट्रेड का टारगेट रखा था।

फरवरी 2022 में यूक्रेन वॉर शुरू होने पुतिन की पहली भारत यात्रा होगी। इस विजिट से दोनों देशों के बीच 2030 के लिए नए आर्थिक रोडमैप को आगे बढ़ाने की उम्मीद है।

भारत और रूस अपने बाइलेट्रल ट्रेड को दोगुना करके सालाना 100 अरब डॉलर से ज्यादा करने पर सहमत हुए हैं। फिलहाल दोनों देशों के बीच करीब 60 अरब डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार है।

मुख्यमंत्री ने कहा- प्रधानमंत्री मोदी का जल संरक्षण अभियान अब मध्यप्रदेश में बनेगा जन आंदोलन

मुख्यमंत्री हर दिन एक जल संरचना का लोकार्पण करेंगे

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की दूरदर्शी सोच के साथ मध्यप्रदेश में वर्षा जल की बूंद-बूंद बचाने का जल गंगा संवर्धन महा अभियान गुड़ी पड़वा के दिन 30 मार्च से शुरू होने जा रहा

पानी दे, गुरुबाणी दे। जल बिन सब सूना है। जो सबको जीवन दे, वो है जल। जल ही जीवन है। इससे हम आज सुरक्षित है, इसी से हमारा कल भी सुरक्षित है। जल बचाना हम सबकी जिम्मेदारी है। जल संरक्षण के लिए सिर्फ सरकार ही नहीं, समाज को भी आगे आना होगा। इसी मंशा से मध्यप्रदेश सरकार जल गंगा जल संवर्धन महा अभियान प्रारंभ करने जा रही है।

है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन स्थित क्षिप्रा तट पर वरुण (जल देवता) पूजन और जलाभिषेक के साथ जल गंगा संवर्धन अभियान का विधिवत शुभारंभ करेंगे। यह प्रदेशव्यापी अभियान ग्रीष्म ऋतु में 30 जून तक 90 दिन से अधिक समय तक लगातार चलेगा। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव हर दिन एक छोटी-बड़ी जल संरचना को लोकार्पित करेंगे। उन्होंने कहा है कि जल संरक्षण के इस अभियान से प्रदेश में भूजल स्तर में सुधार आएगा। पानी की बूंद-बूंद बचाएं,

तभी हमारी सांसें बचेंगी। मध्यप्रदेश सरकार जन, जल, जंगल, जमीन और वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए संकल्पित है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जल संरक्षण अभियान देशभर में एक व्यापक जन-आंदोलन बना है। राज्य सरकार भी खेत का पानी खेत में-गांव का पानी गांव में के सिद्धांत पर जल संरक्षण की दिशा में अभियान चला रही है। हमारी धरा के कुल जल का केवल एक छोटा हिस्सा ही पीने योग्य स्वच्छ जल के रूप में उपलब्ध है। पृथ्वी के कुल जल का लगभग 97 प्‍ तिशत महासागरों में खारा जल है, जो पीने योग्य नहीं है। शेष 3 प्रतिशत मीठा जल है, लेकिन इसमें से भी अधिकांश हिमखंडों और बर्फ की चोटियों में जमा है। सिर्फ 0.5 प्रतिशत से भी कम पानी झीलों, नदियों और भूजल के रूप में उपलब्ध है, जिसे हम उपयोग कर सकते हैं। पृथ्वी पर स्वच्छ और पीने योग्य पानी की मात्रा बहुत ही सीमित है और इसे संरक्षित करना बेहद ज़रूरी है। इसीलिए मध्यप्रदेश सरकार ने जल बचाने के लिए कदम बढ़ाये हैं।

जल बचाने लिए मील का पत्थर सिद्ध होगा अभियान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान में जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए वर्षा जल संचयन, जल स्त्रोतों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। प्रदेश सरकार का यह अभियान जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिए हैं कि वे जल संरक्षण से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता देकर अधिक से अधिक लोगों को अभियान से जोड़ें। उन्होंने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान, प्रदेश में जल संकट को खत्म करने और भावी पीढ़ियों के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने में मील का पत्थर सिद्ध होगा। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के प्रदेशव्यापी जल संवर्धन अभियान में जल संसाधन, नर्मदा घाटी विकास प्राधिकरण, पर्यावरण विभाग, नगरीय विकास एवं आवास, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, स्कूल शिक्षा, उद्यानिकी एवं कृषि सहित 12 से अधिक अन्य विभाग एवं प्राधिकरण साथ मिलकर जल संरचनाओं के जीर्णोद्धार के कार्य करेंगे। अभियान की थीम जन सहभागिता से जल स्त्रोतों का संवर्धन एवं संरक्षण रखी गई है।

16 संस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण है पाणिग्रहण संस्कारः मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

अलीराजपुर में 1369 नव दम्पतियों को 7 करोड़ 52 लाख की राशि कन्यादान के रूप में दी

प्यासे खेत को जब पानी मिलेगा तो सोने के समान होगी खेती

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पाणिग्रहण संस्कार, 16 संस्कारों में सबसे महत्वपूर्ण है। आज अलीराजपुर में 1369 नव दम्पतियों को मुख्मयंत्री कन्या विवाह योजना में 7 करोड़ 52 लाख रूपये की राशि कन्यादान के रूप में दी गई है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी वर (दूल्हों) से कहा कि हम बेटियों के रूप में अपने घर की रौनक आपको सौंप रहे हैं, इनका ख्याल रखना अब आपका दायित्व है। मुख्यमंत्री डॉ.

यादव ने गुरूवार को अलीराजपुर में आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन में शामिल होकर वर-वधू को आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने अलीराजपुर के कलेक्टर को निर्देशित किया कि 220 केवी ग्रिड, ककराना घाट एवं कन्या खेल परिसर का प्रपोजल भेजे, जिससे अविलंब स्वीकृत किया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पुष्प वर्षा कर सामूहिक विवाह सम्मेलन में शामिल नव-दंपत्तियों के परिजन का स्वागत किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अलीराजपुर की प्राकृतिक छटा देखते ही बनती है। उन्होंने कहा कि नर्मदा मैया के किनारे बांध बनाने से अलीराजपुर क्षेत्र में सिंचित भूमि का रकबा बढ़ा है और आर्थिक समृद्धि आई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दिसम्बर 2024 में अलीराजपुर जिले को मिली लगभग 2000 करोड़ रुपए की सोंडवा उद्वहन परियोजना से 169 गाँवों को सिंचाई के लिए जल प्राप्त होगा। प्यासे खेत को जब पानी मिलेगा तो सोने के समान फसल प्राप्त होगी। उन्होंने कहा कि 2600 रुपए प्रति क्विंटल की दर से गेहूं का उपार्जन किया जा रहा है। सरकार सभी कृषकों का गेहूं खरीदेगी। उन्होंने कहा कि गेहूं के लिए **शेष पृष्ठ 5 पर...**

केदारनाथ में बर्फ काटकर तैयार हो रहा रास्ता, बाबा के दर्शन के लिए ग्लेशियरों के बीच से होकर गुजरेंगे श्रद्धालु

नई दिल्ली। 2 मई से बाबा केदारनाथ धाम के कपाट खुलने के साथ ही यात्रा शुरू हो जाएगी। यात्रा के लिए सभी तैयारियां को अंतिम रूप दिया जा रहा है। वहीं धाम में अभी भी चारों तरफ भारी बर्फ ही बर्फ नजर आ रही है। गौरीकुंड से केदारनाथ के पैदल मार्ग में बड़े-बड़े ग्लेशियर बने हुए हैं। जहां से केदारनाथ जाने वाले पैदल यात्रियों को गुजरना होगा। इन हिमखंडो को काटकर लोक निर्माण विभाग के कर्मचारी रास्ता तैयार कर रहे हैं। जिसे पूरा करने में महीने भर का समय लगेगा। गौरीकुंड-केदारनाथ पैदल मार्ग पर रामबाड़ा से लिनचोली के बीच पसरे विशालकाय हिमखंड काटे जा रहे है। इन ग्लेशियर को काटकर मजदूर 8 से 10 फीट बर्फ के बीच रास्ता तैयार कर रहे हैं। जहां से केदारनाथ जाने वाले यात्री गुजरेंगे।

दरअसल, इस साल फरवरी और मार्च के पहले सप्ताह में केदारनाथ सहित पैदल मार्ग तक भारी बर्फबारी हुई थी। इसके बाद से केदारनाथ धाम में अभी भी तीन-चार फीट से अधिक बर्फ जमी हुई है।वहीं, गौरीकुंड-केदारनाथ पैदल मार्ग पर रामबाड़ा से केदारनाथ तक बर्फ के कारण पैदल आवाजाही संभव नहीं है। यहां बीते 14 मार्च से लोक निर्माण विभाग के 70 से अधिक मजदूर बर्फ को काटकर रास्ता बनाने में जुटे हैं।

13 दिनों में लगभग तीन किमी हिस्से में बर्फ साफ कर आवाजाही के लिए रास्ता तैयार हो चुका है। इन दिनों मजदूर थारू हिमखंड को काटने में जुटे हैं।

यहां पर लगभग 20 फीट ऊंचे हिमखंड को काटकर ढाई फीट चौड़ा रास्ता बनाया जा रहा है। बर्फ काटने से यहां गहरी व संकरी घाटी बन गई है।

इन हालातों में यहां बर्फ खिसकने का खतरा बना है। लोनिवि के अधिशासी अभियंता विनय झिक्कांण ने बताया कि मौसम अनुकूल नहीं होने के बाद भी बर्फ सफाई का कार्य जोरों पर चल रहा है।

केंद्रीय मंत्री सिंधिया के प्रयास रंग लाये- अहमदाबाद से ग्वालियर के लिए नई फ्लाइट को मिली मंजूरी

7 अप्रैल से आकासा एयर करेगी संचालन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। अहमदाबाद से ग्वालियर के बीच हवाई यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए खुशखबरी है। समर शेड्यूल में इस रूट पर नई फ्लाइट को मंजूरी मिल गई है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के प्रयासों से आकासा एयर की यह फ्लाइट 7 अप्रैल से संचालित होगी, जिससे यात्रियों को सुचारू रूप से इस सुविधा का लाभ मिल सकेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूसरे कार्यकाल के दौरान, ज्योतिरादित्य सिंधिया ने केंद्रीय मंत्रिमंडल में नागरिक उड्डयन मंत्री का प्रभार संभाला।अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने भारत में नागरिक उड्डयन को जनहितकारी और व्यापक बनाने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए, जिसके प्रभाव आज भी देखने को मिल रहे हैं। वर्तमान में, सिंधिया संचार मंत्रालय और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय का दायित्व संभाल रहे हैं।

सिंधिया का अथक प्रयास

केंद्रीय मंत्री उक्त विमान सेवा को बहाल करने के लिए काफ़ी समय से प्रयासरत थे। वह इस बाबत शासन प्रशासन से कई बार वार्तालाप भी कर चुके थे। गौरतलब है कि विंटर सीजन में आकासा एयर की फ्लाइट सप्ताह में एक दिन चलाई जा रही थी, लेकिन यात्री संख्या कम होने के कारण इसे बंद कर दिया गया था। इस बार उम्मीद की जा रही है कि यात्रियों की अच्छी संख्या मिलने पर इस सेवा को नियमित रूप से जारी रखा जाएगा।

विदित रहे कि राजमाता विजयाराजे सिंधिया हवाई अड्डा देश के सबसे तेज निर्मित हवाई अड्डों में से एक है। इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया गया था।

यात्रियों के लिए बड़ा लाभ

यह फ्लाइट अहमदाबाद और ग्वालियर के बीच यात्रा करने वाले व्यापारियों, पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के लिए सुविधाजनक साबित होगी। इससे दोनों शहरों के बीच संपर्क और आवागमन सुगम होगा।

रोटरी मेडीकल मिशन कैम्प के दूसरे दिन 7248 मरीजों ने कराये पंजीयन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। रोटरी मेडीकल मिशन राहत-2 के तहत 27 मार्च को पुलिस परेड ग्राउंड मुरैना में 7 हजार 248 लोगों ने पंजीयन कराये। पंजीयन के दौरान चंडीगढ़, हरियाणा, दिल्ली, ग्वालियर, इंदौर, जबलपुर के डॉक्टरों ने लोगों का परीक्षण किया।

रोटरी के पदाधिकारी ने बताया कि 191 जनरल ओपीडी, 3791 मेडीसन, 498 ऑर्थोपैडिक्स, 07 पीडियाट्रिक, 283 ईएनटी, 146 गायनकलॉजी, 86 सर्जी, 1057 ऑपथामॉलोजी, 314 डेंटल, 55 यूरोलॉजी, 9 सायकिएट्री, 8 ऑनकोलॉजी, 294 डरमैटलॉजी, 373 पुलमोनरी, 01 पेन मेडीसन, 135 एनसीडी क्लीनिक लोगों ने पंजीयन कराये।

हेल्थ कैम्प में कलेक्टर ने स्पेशिलस्ट डॉक्टरों को किया सम्मानित

मुरैना। रोटरी मेगा कैम्प में दिल्ली से मुरैना आये 03 डॉक्टरों ने गुरूवार को मरीजों का चैकअप

किया। उन्हें स्वास्थ्य लाभ दिलाया। इसके बाद दिल्ली वापस जाते समय कलेक्टर अंकित अस्थाना ने उन्हें सम्मानित किया। जिनमें एम्स से रिटायर्ड हुये ऑर्थोपेस्टि डॉ. प्रकाश कोतवाल के द्वारा गुरूवार को पुलिस परेड ग्राउंड में 150 मरीजों का परीक्षण किया और उन्हें स्वस्थ्य लाभ देने के लिये मेडीसन उपलब्ध कराई।

इसी प्रकार एक्सकोट हॉस्पीटल के डॉ. कौशल कांत ने ज्वॉइंट प्लेसमेन्ट के 60 मरीजों का परीक्षण किया और उन्हें दवा उपलब्ध कराई। दिल्ली से मुरैना पधारे 40 एक्सकोर्ट हॉस्पीटल नई दिल्ली के हार्ट सर्जी स्पेशलिस्ट डॉ. शिवकुमार चौधरी ने 30 लोगों को हार्ट मरीजों का चैकअप किया और उन्हें स्वास्थ्य लाभ देने के लिये इलाज किया। दिल्ली जाते समय कलेक्टर अंकित अस्थाना ने डॉ. शिवकुमार चौधरी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

गुजरात में 10 रुपये के लिए 40 बच्चों ने अपने हाथ काटे

वीडियो गेम खेलकर 7वीं क्लास के बच्चे ने टास्क दिया

आर.एन.एस

अमरेली। गुजरात में एक गांव के सरकारी स्कूल में 40 बच्चों ने शार्पनर से अपने हाथ काट लिए। यह सभी 5वीं से 8वीं क्लास के स्टूडेंट्स हैं। इन्हें स्कूल के ही 7वीं क्लास के एक बच्चे ने टास्क दिया था कि जिसके हाथ ज्यादा घाव होंगे, उसे 10 रुपए इनाम दिया जाएगा। इस स्टूडेंट को वीडियो गेम में ब्लू व्हेल गेम खेलकर ऐसा टास्क देने का आइडिया आया था। पिछले 8-10 दिन से बच्चे अपने हाथ पर कट लगा रहे थे। बुधवार को एक बच्चे के हाथ में कट देखकर उसके पेरेंट्स ने स्कूल में जाकर इसकी शिकायत की, तब मामला उजागर हुआ। मामला अमरेली जिले में मोटा मुंजियासर गांव के प्राथमिक विद्यालय का है। स्कूल से मिली जानकारी के मुताबिक, कक्षा 7 के एक स्टूटेंट ने अपनी क्लास के अन्य स्टूडेंट्स को ब्लेड से हाथ काटने का टास्क दिया था। पहले उसकी क्लास के करीब 10 बच्चे इसमें शामिल हुए और फिर धीरे-धीरे कर पांचवीं से आठवीं क्लास तक के 40 बच्चे टास्क में शामिल हो गए। स्टूडेंट ने टास्क के दौरान शर्त रखी थी कि जिसके हाथ पर ज्यादा यह गहरे घाव होंगे, उसका ही टास्क पूरा माना जाएगा।

टास्क पूरा करने वाले को 10 रुपए का इनाम दिया जाएगा। जो स्टूडेंट टास्क पूरा नहीं कर पाएगा तो उसे 5 रुपए देने होंगे।

जांच में पता चला है कि टास्क देने वाला स्टूडेंट मोबाइल लेकर स्कूल आता है और घर पर अक्सर ऑनलाइन गेम खेलता है।अमरेली के एएसपी जयवीर गढ़वी ने स्कूल पहुंचकर अभिभावकों के बयान दर्ज किए।बवाल मचने पर प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने कहा कि यह अभिभावकों की ही गलती है। वे बच्चों को मोबाइल देखने देते हैं। यह भी ध्यान नहीं देते कि बच्चा मोबाइल पर कौन सा गेम खेल रहा है, या क्या देख रहा है।बच्चों को मोबाइल की लत से छुड़ाने की जिम्मेदारी अभिभावकों की है, शिक्षकों की नहीं।

5वीं और 8वीं परीक्षाओं के परिणाम आज होंगे घोषित

विद्यार्थी दोपहर एक बजे से देख सकेंगे परिणाम

भोपाल~राज्य शिक्षा केन्द्र, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा मध्यप्रदेश में आयोजित कक्षा 5वीं और 8वीं की बोर्ड पैटर्न परीक्षाओं का परिणाम, शुक्रवार 28 मार्च 2025 को दोपहर एक बजे घोषित किया जायेगा।

संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र श्री हरजिंदर सिंह ने बताया कि परिणाम शुक्रवार 28 मार्च को दोपहर एक बजे परीक्षा परिणाम पोर्टल पर जारी किया जायेगा। विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षकगण उक्त परिणामों को राज्य शिक्षा केन्द्र के वेब पोर्टल

222.ह्म्ह्यद्मद्बश्च.द्बठ्ठ/ह्म्द्गह्यह्वद्यह्ल.ड्डह्यश्च× पर अपना रोल नम्बर/समग्र आईडी प्रविष्ट कर देख सकते हैं। इसी पोर्टल पर शिक्षक, संस्था प्रमुख अपनी शाला का विद्यार्थीवार परिणाम भी देख सकेंगे। संचालक राज्य शिक्षा केन्द्र ने बताया कि उक्त परीक्षाओं का संचालन विगत 24 फरवरी से 5 मार्च, 2025 के मध्य किया गया था। इनमें प्रदेश की शासकीय, अशासकीय शालाओं एवं पंजीकृत मदरसों के कक्षा 5वीं के 11 लाख 17 हज़ार से अधिक तथा कक्षा 8वीं के 11 लाख 68 हज़ार से अधिक विद्यार्थी शामिल हुए थे। परीक्षा में शामिल 22 लाख 85 हजार से अधिक विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए कुल 322 केन्द्र बनाये गए थे। इन मूल्यांकन केन्द्रों में एक लाख 19 हज़ार से अधिक मूल्यांकनकर्ताओं के द्वारा अंकों की ऑनलाइन प्रविष्टि पोर्टल पर दर्ज की गई है।

बिजली बिल वसूली में अचानक सख्ती से किसानों में रोष: अजय सिंह

छोटे किसानों के प्रति संवेदना रखें, मुख्यमंत्री बीच का रास्ता निकालें

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

भोपाल। पूर्व नेता प्रतिपक्ष और वर्तमान विधायक अजय सिंह ने विद्युत वितरण कंपनी द्वारा प्रदेश में बिजली की बकाया राशि की वसूली में बरती जा रही अति सख्ती पर आपत्ति दर्ज की है।

उन्होंने कहा कि बिजली बिल समय पर जमा न करने वालों में अधिकतर किसान लोग हैं और इनमें भी 90 प्रतिशत छोटे और सीमांत किसान हैं। विद्युत वितरण कंपनी द्वारा अचानक ही सख्ती किए जाने के कारण किसानों में रोष बढ़ता जा रहा है, क्योंकि जिन गांवों का ज्यादा बिल बकाया है वहां पर पूरे गांव की बिजली काटी जा रही है। लिहाजा गर्मी के समय गांव में पानी की सप्लाई प्रभावित हो रही है, साथ ही गर्मियों की सब्जियां लगाने वाले किसानों की फसल पानी के अभाव में नष्ट होने की कगार पर है। ऐसे में बिजली बिल वसूली में अति सख्ती न की जाकर अधिकारियों को किसानों के प्रति

संवेदनशील रुख अपनाया जाना चाहिए, ताकि आक्रोश के कारण पैदा होने वाली अप्रिय स्थिति से बचा जा सके। उन्होंने कहा कि भू-राजस्व संहिता के अंतर्गत सी फार्म और कुर्की करने, बैंक खाते सील करने और खसरों में बकाया राशि की जानकारी दर्ज करने तथा धारा 138 के प्रकरण बनाए जाने जैसी कार्यवाही गरीब किसानों पर जोर जबरदस्ती की अति है। पहले आपसी बातचीत, समझाईश, ग्राम पंचायत के सहयोग आदि के माध्यम से भी बिजली बिल वसूली की कार्यवाही की जा सकती है। इसके बाद चेतावनी दी जाए। शुरू से ही सख्ती करने पर किसानों में आक्रोश पैदा होगा।

अजय सिंह ने मुख्यमंत्री मोहन यादव से आग्रह किया है कि वे समस्या की गंभीरता को देखते हुए किसानों और बिजली कंपनियों के लिए कोई बीच का रास्ता निकाले ताकि बिजली बिल भी वसूला जाए और किसानों तथा जनता को अकारण परेशानी से बचाया जा सके।

इंदौर में अपना दल (एस) मध्य प्रदेश की चिंतन बैठक कल

भोपाल/लखनऊ। अपना दल (एस) मध्य प्रदेश इकाई द्वारा 29 मार्च को एक महत्वपूर्ण चिंतन बैठक का आयोजन किया जा रहा है। यह बैठक इंदौर के होटल वाइट हाउस इन में सुबह 11 बजे से दोपहर 4 बजे तक आयोजित होगी। बैठक में प्रदेश के निवर्तमान प्रदेश पदाधिकारी, जिलाध्यक्ष और सचिव शामिल होंगे। इसके अलावा, दिल्ली से युवा मंच के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. अखिलेश पटेल भी विशेष रूप से बैठक में शामिल होंगे।

इस बैठक का मुख्य उद्देश्य संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण, आगामी रणनीतियों पर चर्चा और प्रदेश में पार्टी की उपस्थिति को और मजबूत करना है।

बता दें कि उत्तर प्रदेश का तीसरा सबसे बड़ा राजनीतिक दल अपना दल (एस) उत्तर प्रदेश सरकार में गठबंधन में है और केंद्र में पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुप्रिया पटेल राज्य मंत्री का पदभार संभाल रही हैं। अब मध्य प्रदेश में संगठन विस्तार की दिशा में एक कदम आगे बढ़ाते हुए, आलाकमान ने पार्टी को नई दिशा व गति देने का प्रयास किया है।

बैठक संबंधी अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें - रोहित चंदेल (8707587017)

भ्रमण कर रासेयो छात्र छात्राओं ने जाना धरोहरों का महत्व, संरक्षण का लिया संकल्प

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। राष्ट्रीय सेवा योजना महात्मा लोचनदास उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अम्बाह का सात दिवसीय विशेष शिविर चांद का पुरा में जारी है। शिविर का पांचवां दिन छात्र छात्राओं के लिए बहुत ही आनंद दायक, प्रेरणाप्रद एवं अविस्मरणीय रहा। शिविरार्थियों ने मुरैना जिले के पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण कर उनके इतिहास और महत्व के बारे में जानकारी प्राप्त की तथा साफ-सफाई अभियान चलाकर गंदगी न फैलाने का संदेश दिया। कार्यक्रम अधिकारी विजय शर्मा ने स्वयं सेवकों और पर्यटकों को अपनी विरासतों पर गर्व करने और उनका संरक्षण करने को कहा। उन्होंने इस अवसर इस अवसर पर विरासतों को सहेजने और वहां गंदगी न फैलाने की शपथ भी दिलाई। भ्रमण के दौरान शिविरार्थियों ने ककनमठ मंदिर, मितावली, पढ़ावली और बटेश्वरा के मंदिर समूहों का अवलोकन किया।

हाल ही में मितावली के चौसठ योगिनी मंदिर को यूनेस्को की विश्व धरोहरों की अस्थाई सूची में स्थान मिला है ।इस सम्बन्ध में ग्रामीणों की प्रतिक्रिया जानने के लिए शिविरार्थियों ने गांव का भ्रमण किया तथा पर्यटकों के लिए गांव में बने होम स्टे स्थलों को भी देखा। शिविरार्थियों ने होम स्टे मालिकों से भेंट कर उनके द्वारा पर्यटकों को उपलब्ध कराई जाने वाली सुविधाओं के बारे में भी जाना। शाम को शिविरार्थी बदलेंगे तस्वीर गांव की हम एनएसएस के नौजवान के नौजवान तथा जय जगत जय जगत पुकारे जा, सबके हित के बासते अपने सुख बिसारे जा गीतों की पंक्तियां गाते गुनगुनाते हुए खुशी खुशी शिविर में वापस लौटे।

अग्रवाल समाज की संचालित सभी संस्थाएं एकजुट होकर समाज के उत्थान में कार्य करें: मित्तल

अग्रवाल महिला महासभा ग्वालियर ने किया फूलों की होली का आयोजन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। मध्य प्रदेश अग्रवाल महिला महासभा ग्वालियर द्वारा आयोजित फूलों की होली एवं सम्मान समारोह का रंगारंग आयोजन किया गया, जिसमें शहर के गणमान्य समाज बंधुओं ने शामिल होकर आयोजन को भव्यता देकर हमारी महासभा के सभी सदस्यों का मान बढ़ाया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रदेश अध्यक्ष कैलाश मित्तल ने समाजसेवा के क्षेत्र में संस्था के योगदान को विस्तार से अवगत कराया, आने वाले समय में विकास की गति तेज करने की कोशिश और नई योजनाओं के बारे में जानकारी दी। महासभा के संरक्षक अति विशिष्ट अतिथि रमेश अग्रवाल पूर्व विधायक ग्वालियर, अशोक गोयल अध्यक्ष महासभा ग्वालियर, संरक्षक मुकेश अग्रवाल, परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश ऐरन, जिलाध्यक्ष महासभा मुकेश अग्रवाल, सुभम सिंघल, रामकिशन सिंघल, शिवशंकर अग्रवाल, श्रीमती ममता अग्रवाल और नरेंद सिंघल सहित सभी संस्था के गणमान्य सदस्यों ने सभा में अपने सार गर्भित विचार व्यक्त किए और विकास को बढ़ावा देने का मार्गदर्शन कर सभी को समाज हित में कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

अशोक गोयल ने संस्था को महाराज अग्रसेन भवन निर्माण हेतु जो 5 बीघा जमीन दी है। उस महान कार्य को शीघ्र आगे बढ़ाने हेतु सभी गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी सहमति दी, जिसपर शीघ्र ही विशाल अग्रसेन भवन बनाए जाने के लिए सभी का सहयोग और कार्य को पूरा करने का निर्णय लिया गया। संस्था की सभी महिलाओं को सभी अतिथियों द्वारा सम्मानित भी किया गया और नए सदस्यों को ऊर्जा के साथ समाज सेवा के क्षेत्र में जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर सभी महिलाओं ने नृत्य, गेम्स और हाऊजी का आनंद लिया। ग्वालियर के सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीराम उपाध्याय ने हनुमान जी का वेश धारण कर होली खेले अंजनी को लाल सिंदूर से होली खेले भजन पर अपने नृत्य द्वारा सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया। प्रदेश की उपाध्यक्ष श्रीमती लता गुप्ता के अथक प्रयासों से कार्यक्रम सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ। संभागीय अध्यक्ष साधना मित्तल, जिला अध्यक्ष सीमा अग्रवाल, उमा बंसल, उषा गुप्ता, अनुपमा सिंघल, अंजू गुप्ता, शोभा गर्ग, हेमलता गर्ग, मुक्ति बंसल और संस्था के सभी सदस्यों ने अपने सहयोग से कार्यक्रम को अत्यंत सफल बनाया। कार्यक्रम समापन के बाद सभी ने स्वल्पाहार का आनंद भी लिया।

अम्बाह के आशुतोष शुक्ला का जीएसटी विभाग में चयन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। ग्राम बरेह अंबाह निवासी विनोद कुमार शुक्ला, एसएम रेलवे मुरैना के सुपुत्र आशुतोष शुक्ला ने एसएससी एमटीएस परीक्षा में सफलता प्राप्त कर केंद्रीय जीएसटी विभाग में हवलदार के पद पर चयनित होकर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। आशुतोष की सफलता की खबर के बाद उनके परिवार और दोस्तों ने खुशी का इजहार किया और मिठाई बांटी। आशुतोष ने बताया कि यह मेरी पहली सफलता है, लेकिन मेरा लक्ष्य यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण कर आईपीएस बनना है। आशुतोष ने बताया कि उन्होंने घर में रहकर ही दिल्ली के शिक्षकों

से ऑनलाइन मार्गदर्शन लेते हुए हर दिन 8-10 घंटे पढ़ाई की। उनका कहना है कि यदि लक्ष्य बनाकर पूरी तन्मयता से अध्ययन और तैयारी करें तो सफलता मिलना निश्चित है। इस सफलता के लिए मैं अपने स्व दादा शिक्षक रामकृष्ण शुक्ला, स्व दादी शांतिबाई एवं मम्मी, पापा समेत सभी परिवारजनों का आभारी हूं। भविष्य में मैं अपनी कोशिश जारी रखूंगा और अपने साथियों को भी प्रेरित करूंगा। आशुतोष की इस सफलता से न केवल उनका परिवार, बल्कि अंबाह का हर व्यक्ति गर्व महसूस कर रहा है। उनकी यह सफलता अन्य युवाओं के लिए प्रेरणा बन सकती है।

श्री हनुमान जी का श्रृंगार कर चढ़ाया चोला आरती एवं भजन का कार्यक्रम हुआ

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। इलाके के रतनबसई एवं अमिल्हेडा गांव स्थित श्री हनुमान मंदिर पर बालाजी भक्त भागवत कथा आचार्य जितेंद्र उपाध्याय जी महाराज ने श्री हनुमान जी महाराज का भव्य श्रृंगार कर चोला चढ़ाया। इसके बाद पूजा-अर्चना की और भोग लगाया गया। आरती के अलावा यहां अन्य धार्मिक कार्यक्रम भी हुए। उसके बाद सभी को प्रसाद बांटा गया। इस दौरान उपाध्याय जी महाराज ने कहा कि जो भी बाबा पर चोला चढ़ाता है बाबा उसकी मनोकामना को जरूर पूरी करते हैं को उन्हें सच्चे मन से स्मरण करता है उन्होंने बताया मंदिर में हनुमान जी की मनोहारी मूर्ति स्थापित है यह प्रभावशाली मूर्ति है। उपाध्याय जी महाराज ने बताया इस अवसर पर भगवान हनुमान को सिंदूर और चमेली के तेल का चढ़ावा चढ़ाने वाले भक्तों की भीड़ लगी रही। इस मंदिर की स्थापना वर्षों पूर्व हुई थी। इस ऐतिहासिक हनुमान मंदिर में पूजा करने वाले लोगों की मनोकामना जरूर पूरी होती है। मंदिर में दूर दूर के श्रद्धालु भक्त भी आते हैं अब तक यहाँ हजारों लोगों की मन्नत पूरा हो चुकी है। संकट मोचन, अंजनी सुत, पवन पुत्र हनुमान बजरंगबली की विधिवत पूजा पाठ करने से शत्रु पर विजय और मनोकामना की पूर्ति होती है। हनुमान जी भगवान शिव के 11वें रूद्र अवतार माने जाते हैं।

आदिनाथ महिला मंडल के चुनाव सम्पन्न, रजनी बनीं अध्यक्ष

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। धर्म संस्कृति एवं समाज सेवा के कार्य के लिए समर्पित जैन समाज के आदिनाथ महिला मंडल के चुनाव श्री आदिनाथ जिनालय में संपन्न हुए। यह चुनाव सर्वसम्मति से हुए तथा इस दौरान नवीन कार्यकारिणी गठित कर दी गई हैं। जिसमें श्री मती रजनी जैन को अध्यक्ष और मालती जैन को महामंत्री बनाया गया है।

बैठक में परम संरक्षक श्रीमती ऊषा जैन भंडारी ने कहा कि कोई भी समाज हो, यदि वह संगठित नहीं है तो उस समाज का विघटन हो सकता है। इसलिए समाज में एकरूपता, समानता आवश्यक है। तभी समाज और लोगों का कल्याण हो सकेगा।उन्होंने समाज के लिए पूरे प्राण-प्रण से काम करने की बात कही।

बैठक में मंडल की नवीन कार्यकारिणी गठित की गई। जिसमें अध्यक्ष और महामंत्री के अलावा श्रीमती कमलेश जैन को कोषाध्यक्ष, श्रीमती मीना जैन एवं रेणुका जैन को उपाध्यक्ष बनाया गया है। इसके अलावा श्रीमती मीना जैन परेड मंत्री, श्रीमती ऊषा भंडारी परम संरक्षक, श्रीमती दीपा जैन संरक्षक, श्रीमती बबिता जैन संरक्षक एवं श्रीमती पूरन देवी संरक्षक मनोनीत की गई।

जल संकट के मुहाने पर दुनिया, इसे टालने बूंद-बूंद सहेजने की आवश्यकता

जल संरक्षण पर संगोष्ठी में घटते जल स्त्रोतों पर चिंता जताई

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। इस समय पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन और सिकुड़ते प्राकृतिक जल स्त्रोतों के कारण मानव सभ्यता पर संकट के बादल मंडरा रहे है। इंसान हो या अन्य जीव जंतु सभी के लिए पानी आवश्यक है। इसके बिना जीवन की कल्पना नही की जा सकती है। लेकिन आज समूचे विश्व में जल संकट एक वैश्विक चुनौती के रूप में सामने खड़ा है। आज देश जल संकट के मुहाने पर है और इसकी आहट स्पष्ट सुनाई दे रही हैं। जिसने पूरे विश्व को इस दिशा में सोचने को मजबूर कर दिया है। जल संकट से निपटने के लिए एक एक बूंद को सहेजकर एवं विवेकपूर्ण उपभोग की आवश्यकता हैं। यह बात मप्र शिक्षक संघ के संभागीय अध्यक्ष डॉ. नरेश सिंह सिकरवार ने कही। डॉ. सिकरवार जल संरक्षण को लेकर हुई संगोष्ठी कार्यक्रम को संबोधित कर थे। अमर शहीद बिस्मिल जनकल्याण संस्थान द्वारा आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में संस्था के सदस्य, मप्र शिक्षक संघ के पदाधिकारियों , शिक्षक एवं ग्रामीणों व छात्र शामिल रहे। इस दौरान संभागीय अध्यक्ष डॉ. सिकरवार ने कहा कि जीवन का मूल तत्व जल धरती पर बहुत सीमित है। हमें धरती पर जीवन बचाने जल संरक्षण की दिशा में कारगर उपाय करने होंगें। हर इंसान को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। आज दुनिया के साथ हमारे देश में भी जल संकट महासंकट बनकर उभरा है। आँकड़े बताते हैं कि विश्व के 1.5 अरब लोगों को पीने का शुद्ध पानी नही मिल रहा है। ब? ब? शहरों में कम पानी उपलब्धता के कारण पलायन शुरू हो गया है।

भारत में पानी की कमी का संकट लगातार किस कदर गहरा रहा है, इसका अनुमान सरकार द्वारा संसद में दी गई उस जानकारी से भी लगाया जा सकता है, जिसमें बताया गया था कि वर्ष 2001 और 2011 में भारत में जल उपलब्धता प्रति व्यक्ति क्रमशः 1816 और 1545 घन मीटर थी, जो अब 1480 घन मीटर से भी कम रह जाने का अनुमान है। नीति आयोग यह चेतावनी दे चुका है कि देश के 21 बड़े शहरों में भू-जल का स्तर आने वाले समय में शून्य तक पहुंच सकता है।

इस अवसर पर विमलेश यादव, विनोद सिकरवार, रामबरन शर्मा, सतंजय मिश्रा, राजेन्द्र शर्मा , रघुराज परमार, विनोद शर्मा रवि राजपूत, शिवराज जालौन, कुबेर खरे, गिरीश शर्मा, भारत सिंह, रामबरन शर्मा, मनमोहन सिंह, रामलखन, ज्योति, रश्मि अग्निहोत्री, सहित छात्र, वरिष्ठ नागरिक मौजूद रहे।

।। श्री गणेशाय नमः ।।
।। भगवान श्री सहस्त्रार्जुनाय नमः ।।

कलचुरि कलार महासभा, ग्वालियर
कलचुरि महिला मण्डल, ग्वालियर

सामूहिक विवाह सम्मेलन

समस्त समाज बन्धुओं को बड़े हर्ष के साथ सूचित किया जाता है कि कलचुरि कलार महासभा, ग्वालियर ने सामुहिक विवाह सम्मेलन करने का निर्णय लिया है। जिसमें 51 जोड़ों का विवाह किया जाना तय है। समस्त समाज बन्धुओं से निवेदन है जो अपने पुत्र एवं पुत्री का विवाह सम्मेलन से करना चाहते हैं वह अपने-अपने फार्म समिति के पास जमा करने का कष्ट करें।

मुख्य संरक्षक:
सेठ नरेश गुप्ता जी
सेठ लक्ष्मी नारायण जी शिवहरे
सेठ रामस्वरूप जी शिवहरे (लल्ला)

कार्यक्रम:
दिनांक : 30 अप्रैल 2025, बुधवार
समय : प्रातः 10:00 बजे से
स्थान : फूलबाग मैदान, ग्वालियर

संरक्षक: सर्वश्री प्रेम नारायण गुप्ता (एडवोकेट), आर.एन.गुप्ता, अशोक शिवहरे (IAS), दिनेश जायसवाल, जयपाल सिंह महाजन, श्री जमुना प्रसाद महाजन, मदन पवैया, निरंजन सिंह राय,आनन्द प्रकाश गुप्ता, केदारनाथ गुप्ता, होतम शिवहरे, पूरन शिवहरे, भगवान दास गुप्ता, शिवदयाल पवैया यादराम शिवहरे, रामजीलाल शिवहरे (तानसेन नगर), रमेश चंद्र शिवहरे , बाबूलाल राय, शिवरंजन गुप्ता, ओम नारायण शिवहरे, हरिशंकर शिवहरे, कमल जायसवाल, राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल, हरीबाबू शिवहरे, जगदीश शिवहरे (जौरा), जगदीश शिवहरे (परेड), भगवती प्रसाद जायसवाल, हरिनाराण जायसवाल, चन्द्रप्रकाश शिवहरे, मूलचंद्र शिवहरे, रमेशचंद्र शिवहरे (चना कठोर), बच्चनवाल शिवहरे, किशोरलाल राय, देवीचरण राय, लोकमन सिंह राय, सीताराम राय एवं समस्त वरिष्ठ समाज बन्धुगण

अध्यक्ष: सुरेश चन्द्र शिवहरे मोबा: 9826296595
कार्यकारी अध्यक्ष: वेद प्रकाश शिवहरे मोबा: 9425115799
कार्यकारी अध्यक्ष: देवेन्द्र पवैया मोबा: 9826272626
महासचिव: रघुवीर राय मोबा: 9826187408

फार्म जमा करने की अंतिम तिथि 15 अप्रैल 2025

फॉर्म प्राप्त एवं जमा करने का स्थान

श्री रघुवीर राय
पी.एच.ई. कॉलोनी, मोतीझील, ग्वालियर
मोबाइल 98261-87408

श्री रामस्वरूप जायसवाल
एस.एन.बेलवेट हाउस
मोची ओली, दयानंद मार्ग, लश्कर, ग्वालियर
मोबाइल 96917-57863

होटल महिमा
रेलवे स्टेशन प्लेट फार्म नंबर 4 के पास
ग्वालियर मोबाइल 98263-47357

सिटी पैलेस होटल
संजय कॉम्पलेकस जयेन्द्रगंज, लश्कर, ग्वालियर
मोबाइल 98262-72626

निवेदक:- दैनिक हिन्दुस्तान एक्सप्रेस समूह

सेंट्रल जेल में संदिग्ध हालात में बंदी की मौत, दुष्कर्म के मामले में काट रहा था सजा

– परिजन ने जेल प्रशासन पर लगाया हत्या का आरोप

ग्वालियर। सेंट्रल जेल में दुष्कर्म के मामले में सजा काट रहे बंदी की संदिग्ध हालत में मौत हो गई। जेल प्रबंधन का कहना है कि बुधवार रात को तबीयत बिगड़ने पर बंदी को उपचार के लिए जयारोग्य अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अस्पताल में उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। पुलिस व जेल प्रबंधन का मानना है कि संभवतः हार्ट अटैक से उसकी मौत हुई है। पुलिस ने शव पीएम हाउस भेज कर जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार ग्राम पठारी कदीम थाना कुलपहाड़ जिला महोबा उत्तर प्रदेश निवासी मनोज यादव पुत्र दयाराम यादव उम्र 28 की बुधवार को कोर्ट से रिहाई के आदेश आए थे। लेकिन समय ज्यादा होने के कारण जेल प्रशासन ने उसके परिजनों को गुरूवार सुबह आने का कहकर लौटा दिया था। गुरुवार सुबह जब मृतक के परिजन जेल पहुंचे तो पता चला कि देर रात तबीयत बिगड़ने के चलते उसकी अस्पताल में मौत हो गई। इस पर परिजनों ने जेल के बाहर हंगामा करना शुरू कर दिया और जेल प्रशासन पर हत्या का आरोप लगाया है। यहां बता दें कि मनोज को दुष्कर्म और पोस्को एक्ट के मामले में उत्तर प्रदेश में गिरफ्तार किया गया था। गिरफ्तारी के बाद वह उत्तर प्रदेश की जेल में ही बंद था। 2020 में उसे ग्वालियर केंद्रीय जेल में ट्रांसफर किया गया था। बुधवार-गुरुवार देर रात करीब 3 बजे कैदी मनोज यादव की तबीयत खराब होने पर जेल प्रशासन ने उसे जयारोग्य अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया था, जहां उसकी इलाज के दौरान देर रात 3.30 बजे मौत हो गई। मृतक की बहन पूजा का कहना है कि उसके भाई की बुधवार को सायं 6 बजे रिहाई होनी थी। पूजा के साथ उसका देवर और पुलिस वाला था। उनका भाई पिछ्ले 7 साल से जेल में दुष्कर्म के मामले में सजा काट रहा था। पुलिसकर्मी ने कहा कि वह मनोज की रिहाई का ऑर्डर लेकर आए हैं, उसे छोड़ दो। जेल वालों ने कहा कि देर ज्यादा हो गई है। गुरूवार सुबह 7 बजे आना तब मनोज को छोड़ देंगे। गुरूवार सुबह 6 बजे ही वह जेल के बाहर आ गई थी। फिर जेल के पुलिसकर्मियों ने आवाज लगाकर बोला कि मनोज को लेने कौन आया है। पूजा ने कहा कि मैं आई हूं तो पुलिसकर्मियों ने कहा कि अभी वह नहा रहा है। कुछ देर इंतजार करो तो हम इंतजार करने लगे। लेकिन 9 बजे फिर से पुलिसवाले ने हमें बुलाया तो मेरे देवर और पापा गए। उन्होंने कहा कि मनोज की मौत हो गई है। कल रात को तो मेरा भाई जिंदा था। आज अचानक उसकी मौत कैसे हो गई। मेरे भाई को जेल वालों ने हीं मारा है। इस मामले में केन्द्रीय जेल अधीक्षक विदित सरवैया ने बताया कि दुष्कर्म के मामले में सजा काट रहे मनोज यादव की बुधवार-गुरुवार की दरमियानी रात को हालत बिगड़ी और उसे उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां उसने दम तोड़ दिया। उल्लेखनीय हे कि आरोपी मनोज पुत्र दयाराम यादव को 7 साल पहले उत्तर प्रदेश पुलिस ने दुष्कर्म और पोस्को एक्ट के मामले में पकड़कर जेल पहुंचाया था। 4 फरवरी 2020 को उत्तर प्रदेश की जेल से उसे ग्वालियर जेल में ट्रांसफर किया गया था। संभवतः उसे हार्ट अटैक आया और उसकी हालत बिगड़ी थी। पुलिस को सूचना दे दी है। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

महिला की हत्या के आरोपी ससुर-देवर गिरफ्तार

ग्वालियर। बहोडापुर थाना क्षेत्र के रविदास नगर में बुधवार रात को महिला की चाकुओं से गोदकर हत्या कर फरार हुए आरोपी ससुर अतर सिंह और देवर राहुल जाटव को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। दोनों आरोपियों ने प्रारंभिक पूछताछ में पुलिस को बताया कि पुश्तैनी मकान के सामने महिला ने 2 कमरे बना लिए थे। जिसको लेकर बुधवार रात में भी उनके बीच विवाद हुआ था। इसी विवाद में देवर राहुल ने महिला को चाकू मारे थे। फिलहाल पुलिस पकड़े गए दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। महिला का पति अभी इंदौर जेल में बंद है।

बहोड़ापुर पुलिस के मुताबिक रविदास नगर निवासी भारती जाटव (40) का अपने ससुर अतर सिंह और देवर राहुल से पिछले कुछ दिनों से विवाद चल रहा था। इस विवाद को लेकर कभी-कभी इनके बीच गाली-गलौज और मारपीट जैसी घटनाएं होती रहती थीं। महिला ने पुश्तैनी घर के सामने दो कमरे बना लिए थे, इसको लेकर ही विवाद होता था। बुधवार रात करीब 10.30 बजे भी इसको लेकर महिला, ससुर और देवर में विवाद शुरू हो गया था। देवर राहुल ने महिला भारती के साथ गाली-गलौज की। इस पर भारती ने विरोध किया और मारपीट शुरू हो गई। विरोध के बाद राहुल आक्रोशित हो गया और महिला पर चाकू से हमला कर दिया था। इस दौरान राहुल का पिता अतर सिंह भी उसके साथ आ गया। दोनों के भागने के बाद पड़ोसियों ने पुलिस को सूचना दी थी। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने पूछताछ शुरू की तो भारती के बच्चों ने विवाद से लेकर हत्या तक की पूरी कहानी सुना दी। दोनों आरोपी महिला की हत्या कर भागने से पहले घर में लगे सीसीटीवी और डीवीआर भी सबूत मिटाने के लिए तोड़कर गए थे। सीएसपी किरण अहिरवार ने बताया कि बुधवार रात को चाकू से हत्या करने वाले देवर और ससुर को बहोड़ापुर थाना पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत सभी जिलों मे हो प्रभावी कार्यवाही: संभागीय आयुक्त

ग्वालियर । जल गंगा संवर्धन अभियान का शुभारंभ 30 मार्च 2025 को वर्ष प्रतिपदा के दिन क्षिप्रा नदी के तट उज्जैन में राज्य स्तरीय कार्यक्रम के आयोजन से किया जायेगा। अभियान के तहत संपूर्ण मध्यप्रदेश में जल संरक्षण व संवर्धन के कार्यों का क्रियांवयन किया जायेगा। अभियान 30 जून 2025 तक चलेगा। अभियान के तहत सभी जिलों कि विस्तृत कार्य योजना तैयार कर जल संरक्षण व संवर्धन के कार्य किये जाये। संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने गुरुवार को ऑनलाईन अभियान की समीक्षा के दौरान यह बात कही ।

संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने जल गंगा संवर्धन अभियान, आगामी गर्मी के मौसम को देखते हुए शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की उपलब्धता और सीएम हेल्पलाईन में दर्ज प्रकरणों के निराकरण के संबंध में विस्तार से समीक्षा की गयी। संभागीय आयुक्त ने कहा कि जल

संवर्धन एवं संरक्षण के लिये सभी जिलों में शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य योजना बना कर कार्य किये जाए। सभी कार्यों में तकनीकी अधिकारियों के सहभागिता सुनिश्चित की जाये। इसके साथ ही सभी जिलों में वृहद वृक्षारोपण के कार्य भी हाथ में लिये जाए। इन कार्यों में जल प्रतिनिधियों का सहयोग भी लिया जाये। संभागीय आयुक्त ने आगामी गर्मी के मौसम को देखते हुए पेयजल प्रबंधन के लिये भी सभी तैयारियां समय रहते करने के निर्देश दिए है। जिन ग्रामों में पूर्व में पेयजल परिवहन की आवश्यकता पड़ी है उन ग्रामों मे विशेष प्रयास किये जाए जिससे पेयजल परिवहन की स्थिति न बने। जिले में खेत तालाब , अन्य तालाबों के निर्माण कार्य भी हाथ में लिए जाए। शासन स्तर से प्राप्त लक्ष्य अनुरूप सभी कार्य हो यह भी सुनिश्चित किया जाये।

संभागीय आयुक्त ने कार्यपालन यंत्री को किया निलंबित

संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने शिवपुरी जिले के कार्यपालन यंत्री, लोकनिर्माण विभाग खण्ड क्रमांक-1 धर्मेन्द्र सिंह यादव को वित्तीय अनियमितताओं में शामिल पाये जाने पर तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। निलंबन अवधि में उनका मुख्यालय कलेक्टर कार्यालय शिवपुरी रहेगा। निलंबन अवधि नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ते की पात्रता होगी। संभागीय आयुक्त मनोज खत्री ने कलेक्टर शिवपुरी के प्रतिवेदन पर उक्त कार्यवाही की है।

चोरी की मोटर सायकिल खरीदने वाला पकड़ा, मोटर सायकिल जब्त

ग्वालियर। क्राइम ब्रांच व बहोड़ापुर थाना पुलिस ने चोरी की मोटर सायकिल खरीदने वाले एक आरोपी को पकड़ा है। पुलिस ने आरोपी से पूछताछ के बाद उसके पास से दिल्ली से चोरी हुई मोटर सायकिल जब्त की है। पुलिस पकड़े गये आरोपी से पूछताछ कर रही है।

डीएसपी अपराध नागेन्द्र सिंह सिकरवार, थाना प्रभारी अपराध हितेन्द्र सिंह राठौर व थाना प्रभारी बहोड़ापुर जितेन्द्र सिंह तोमर ने बताया कि पुलिस की टीम मोतीझील तिराहा वाईपास रोड़ पर वाहन चेकिंग कर रही थी। तभी पुलिस टीम को एक संदिग्ध व्यक्ति काले रंग की हीरो स्पलेण्डर प्लस मोटर साइकिल पर सवार आता हुआ दिखा, जिसने पुलिस चेकिंग को देखकर मोटर साइकिल वापस मोड़कर भगाने का प्रयास किया, परन्तु मुस्तैदी से खड़े पुलिस जवानों द्वारा उसे घेराबंदी कर पकड़ लिया गया। पकड़े गये संदिग्ध से नाम पता पूछने पर उसने स्वयं को ग्राम कोंदेरा थाना कैलारस जिला मुरैना (म.प्र.) का रहने वाला बताया। पकड़े गये संदिग्ध के पास से मिली हीरो स्पलेण्डर प्लस मोटर साइकिल के संबंध में कागजात मांगे गये तो उसके द्वारा पुलिस टीम को गुमराह करने का प्रयास किया, परन्तु पुलिस टीम ने जब कडाई से पूछताछ की तो उसने मोटर साइकिल ग्राम भैंसइया थाना कैलारस जिला मुरैना निवासी एक व्यक्ति से 11 हजार रूपये में खरीदना बताया एवं मोटर सायकिल उस व्यक्ति ने सिगनेचर ब्रिज भजनपुरा दिल्ली थाना न्यू उस्मानपुरा नोर्थ ईस्ट दिल्ली से चोरी की थी। जिस पर पुलिस टीम द्वारा मोटर सायकिल के संबंध में जानकारी एकत्रित की गई तो मोटर सायकिल सिगनेचर ब्रिज भजनपुरा दिल्ली से चोरी होना पाई गई जिसके संबंध में 24 जुलाई 2024 को फरियादी नवदीप कुमार ने थाना न्यू उस्मानपुरा नोर्थ ईस्ट दिल्ली में ई-एफआईआर दर्ज करावाई गई है। पकड़े गये आरोपी को यह कृत्य धारा 303(2), 317(2) बीएनएस के दहत दण्डनीय पाये जाने पर आरोपी के पास से मिली चोरी की हीरो स्पलेण्डर प्लस मोटर साइकिल को जब्त कर लिया है। पुलिस अब मोटर सायकिल चोरी करने वाले वाहन चोर की तलाश कर रही है।

शराब पीकर बार के बाहर भिड़े युवक

ग्वालियर। इंदरगंज थाना क्षेत्र के छप्पर वाला पुल स्थित सुदर्शन बीयर बार के बाहर शराब के नशे में युवकों के बीच जमकर मारपीट हुई। इस घटना का वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में दिख रहा है कि आधा दर्जन युवक बीच चौराहे पर एक-दूसरे को लात-घूंसे से पीट रहे हैं। इस दौरान मौके पर मौजूद एक व्यक्ति ने इस घटना का वीडियो बना लिया। बुधवार देर रात की इस घटना का वीडियो गुरुवार दोपहर को सामने आया। राहगीरों ने मारपीट की सूचना पुलिस को दी। इंदरगंज थाना प्रभारी धर्मेंद्र सिंह कुशवाहा ने बताया कि सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची। लेकिन तब तक सभी युवक वहां से फरार हो चुके थे। पुलिस के मुताबिक शराब पीने के बाद किसी बात को लेकर युवकों में विवाद हुआ। विवाद इतना बढ़ा कि वे एक-दूसरे को पीटने लगे। एक मिनट 16 सेकेंड के इस वीडियो के आधार पर पुलिस मारपीट करने वाले युवकों की पहचान कर रही है। साथ ही मौके पर मौजूद लोगों से भी पूछताछ की जा रही है।

शहर की बावड़ियों के जीर्णोद्धार का काम प्रमुखता से कराएं: कलेक्टर

ग्वालियर । शहर की बावड़ी व अन्य पुरानी जल संरचनाओं का जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत प्रमुखता के साथ जीर्णोद्धार कराएं साथ ही घर-घर में रेन वाटर हार्वेस्टींग प्रणाली प्रमुखता से स्थापित कराएं। शहर भर में प्रमुख स्थानों व बाजारों में ग्रीष्म ऋतु के दौरान सार्वजनिक प्याऊ भी खोलें। इस आशय के निर्देश कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान ने जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा के दौरान दिए।

राज्य शासन के दिशा निर्देशों के तहत वर्ष प्रतिपदा 30 मार्च से ग्वालियर जिले में भी जल गंगा संवर्धन अभियान शुरू होगा। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने गुरुवार को बाल भवन के सभागार में संबंधित अधिकारियों की बैठक लेकर जिले के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत आयोजित होने वाली गतिविधियों पर चर्चा की। साथ ही अभियान को सुव्यवस्थित ढंग से आयोजित करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने नगर निगम के अधिकारियों को निर्देश दिए कि

भवन अनुमति के समय रेन वाटर हार्वेस्टिंग मद में जमा कराई गई धनराशि से जल गंगा संवर्धन अभियान के दौरान शहर भर में विशेष रूप से रूफवाटर हार्वेस्टिंग संरचनाएं बनवायी जाएं। उन्होंने सरकारी भवनों में प्रमुखता के साथ ऐसी संरचनाएं बनवाने के लिए कहा। कलेक्टर ने शहर की पहाड़ियों पर ट्रेंच बनाकर वर्षा जल का संरक्षण करने के भी निर्देश दिए। साथ ही कहा कि वन विभाग की मदद से मिट्टी की सीड बॉल (बीज की गेंद) तैयार कर पहाड़ियों पर बनाई जाने वाली ट्रेंच में डालने के लिए कहा। उन्होंने पहाड़ियों को हरित क्षेत्र के रूप में विकसित करने के निर्देश दिए।

जल गंगा संवर्धन अभियान की तैयारी को लेकर हुई बैठक में कलेक्टर श्रीमती चौहान ने नलों के लीकेज ठीक करने , टूटे हुए नलों को बदलने व पाइप लाइनों के लीकेज सुधारने के निर्देश भी दिए। साथ ही घरों और सार्वजनिक स्थलों पर पानी का अपव्यय रोकने पर बल दिया।जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले के ग्रामीण अंचल में 300 खेत तालाब बनाए जाएंगे। ग्रामीण अंचल में अमृत सरोवरों का भी निर्माण किया जायेगा। कलेक्टर श्रीमती चौहान ने तालाबों के किनारे अभियान के तहत वृहद स्तर पर वृक्षारोपण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत किसान कल्याण व कृषि विकास , उद्यानकी , लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, पर्यावरण , वन, राजस्व, जल-संसाधन व उद्योग इत्यादि विभागों के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियों की जानकारी दी। साथ ही राज्य शासन के दिशा निर्देशों के तहत अभियान की सभी गतिविधियों को प्रभावी ढंग से मूर्त रूप देने के निर्देश दिए। बैठक में जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी विवेक कुमार व निगम आयुक्त संघ प्रिय सहित संबंधित विभागों के अधिकारी मौजूद थे।

जनता के लिये कांग्रेस का हर कार्यकर्ता अपना खून बहाने को भी तैयार: विधायक सिकरवार

ग्वालियर। जनता को मौलिक सुविधायें को उनके अधिकार दिलाने के लिए कांग्रेस पार्टी वचनवद्ध है। कांग्रेस पार्टी कभी झूठे वादे नहीं करती है, चाहे हमारी सरकार हो या न हो हम दिन-रात जनता के साथ खड़े हुये है और यहां जनता को कोई भी परेशानी होगी वहां कांग्रेस का हर कार्यकर्ता अपना खून बहाने से भी पीछे नहीं हटेगा। यह बात गुरूवार को कांग्रेस विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने वार्ड क्रमांक 59 के कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक में कहीं।

पूर्व विधानसभा के ब्लॉक इंदरगंज के वार्ड क्रमांक 59 में गुरूवार सुबह उषा कॉवेंट स्कूल लभेडपुरा नाका

चन्द्रवदनी में सैंकडों कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। बैठक में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुये विधायक डॉ. सतीश सिकरवार ने कहा कि बिजली, पानी, सड़क, महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी पर भाजपा सरकार का कोई ध्यान नहीं है। भाजपा सरकार केवल उद्योगपतियों के लिये काम कर रही है। उन्होंने कहा कि आज हमारी लडाई जनता के लिए धन-बल वाली तानाशाही सरकार से है। लेकिन फिर भी कांग्रेस हार मानने वाली नहीं है हमें जनता के लिये पूरे जोश के साथ खड़ा रहना है। बैठक में प्रदेश प्रवक्ता राम पाण्डे, युवा कांग्रेस राष्ट्रीय सचिव हेवरन कंषाना, एम.आई.सी सदस्य अवधेश कौरव, ब्लॉक अध्यक्ष अनूप शिवहरे, पार्षद सुरेन्द्र साहू, पार्षद अंकित कटठल, राम गोपाल झा, साहब सिंह बघेल, मयंक झा, भूपेन्द्र बघेल, अवधेश साहू, राजेन्द्र यादव आदि उपस्थित थे।

जप न कर सको तो मानसी जप जरूर करो: राघव ऋषि

ग्वालियर। आज की भागदौड़ की जिंदगी में कई बार इंसान चाहकर भी जप नहीं कर पाता है। जप के लिए यदि समय नहीं निकाल पा रहे तो मानसी जप जरूर करना चाहिए, यानि अपने काम को करते हुए भगवान का नाम सुमरिन करते रहना। जैसे कि यदि गाड़ी चला रहे हो अथवा पैदल घूम रहे हो, हर वक्त जब भगवान का ध्यान करोगो तो उनसे आपका एक नजदीका रिश्ता बन जाएगा। यह विचार माधव मंगलम गार्डन में ऋषि सेवा समिति द्वारा आयोजित हो रही श्रीमद्भागवत कथा के सांतवें दिन गुरूवार को कथा व्यास राघव ऋषि ने व्यक्त किए।

उन्होंने बताया कि एकर करोड़ जप से आरोग्य और 8 करोड़ जप से अकाल मृत्यु नहीं होती है। सत्संग भक्ति नहीं भक्ति का प्रकार है। सत्संग और भक्ति एक नहीं बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। सत्संग करने वाला यदि भक्ति नही करेगा तो वह सार्थक नहीं हैं। इसी तरह भक्ति करने वाला यदि सत्संग नहीं करेगा तो पूर्ण रस नहीं मिलेगा। उन्होंने कहा कि कई लोग वर्षो से कथा तो सुन रहे हैं लेकिन भक्ति नही कर पाते हैं। सत्संग के संग भक्ति जरूरी है। उन्होंने कहा कि जो धर्म को नहीं मानता है, धर्म उसका नाश कर देता है। जीवन में यदि ग्रंथ, मंत्र संत और कंत हो तो धर्म अर्थ काम मोक्ष फ्लीभूत हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान की भक्ति करते समय यदि आंसू निकलने लगें तो समझो तन मन पवित्र हो गया।

सुदामा चरित्र की व्याख्या करते हुए राघव ऋषि ने कहा कि सुदामा अर्थात् सुंदर रस्सी से बंधा हुआ। माता, पिता, भाई, पत्नी पुत्र आदि दस रस्सियों से जीवरूपी सुदामा बंधा है। वो अपनी पत्नी की कहने पर भगवान के घर की ओर कदम बढाता है। जीव यदि दो कदम प्रभु के लिए आगे बढ़े तो भगवान सौ कदम आगे बढ़ते हैं। इस अवसर पर सौरभ ऋषि ने अरे द्वारपालों कन्हैया से कह दो भजन सुनाया तो लोग मंत्रमुग्ध हो गए। इस मौके पर चेंबर ऑफकॉमर्स के अध्यक्ष प्रवीण अग्रवाल, लक्ष्मीनारायण शिवहरे, समिति के आनन्द मोहन अग्रवाल, संतोष अग्रवाल, प्रमोद गर्ग, संजय शर्मा, अम्बरीष गुप्ता, उमेश उप्पल, मनीष गोयल, देवेंद्र तिवारी सहित अनेक श्रद्धालु श्रोता मौजूद रहे। कथा संयोजक रामबाबू अग्रवाल ने बताया कि शुक्रवार 28 मार्च को समापन दिवस भावपूर्ण प्रसंग सहित विविध प्रसंगों पर सुबह 10 से 12 बजे तक वर्णन होगा, तत्पश्चात भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

होटल तानसेन रेजिडेंसी से वसूला सफाई शुल्क

ग्वालियर। स्वच्छता सर्वेक्षण के अंतर्गत गंदगी फैलाने वालों, अमानक पॉलीथिन, गोबर नालियों में बहाने वालों पर निगम द्वारा निरंतर कार्रवाई की जा रही है। मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी वैभव श्रीवास्तव ने बताया कि नगर निगम ने गुरूवार को सिटी सेंटर स्थित होटल तानसेन रेजिडेंसी से सफाई शुल्क 5000 रूपये जुर्माना राशि वसूल की गई है। कार्रवाई के दौरान फ्लाइंग स्क्वायड टीम प्रभारी करन टांक, जेडएचओ राकेश करोसिया, भीकाराम, लक्ष्मण करोसिया, नीरज, विक्रम, पूरन उपस्थित थे।

38 श्वानों को लगाई एंटी रेबीज वैक्सीन

ग्वालियर। एनीमल बर्थ कन्ट्रोल रूल-2023 के अन्तर्गत शहर में गुरूवार को डीबी सिटी, विंडसर हिल्स, ब्ल्यू लॉटस कॉलोनी में कैंप लगाकर आवारा श्वानों को एंटी रेबीज वैक्सीन (एआरव्ही) लगाई गई है। सहायक नोडल अधिकारी एबीसी गौरव परिहार ने बताया कि डी.बी. सिटी में 12 श्वान, विंडसर हिल्स में 21 श्वान एवं ब्ल्यू लोटस कॉलोनी में 5 कुल 38 श्वानों को एंटी रेबीज वैक्सीन (एआरव्ही) लगाने की कार्यवाही की गई है। एंटी रेबीज वैक्सीन (एआरव्ही) कैंप नगर निगम द्वारा प्रतिदिन विभिन्न विधानसभाओं में लगाये जायेंगे।

नगर निगम ने शीतल जल प्याऊ का किया शुभारंभ

ग्वालियर। भीष्ण गर्मी में आमजन को ठंडा एवं शीतल पेयजल उपलब्ध हो सके इसके लिए नगर निगम द्वारा शीतल जल प्याऊ लगाई गई हैं। सहायक यंत्री केसी अग्रवाल ने बताया कि भीष्ण गर्मी को देखते हुए जगह जगह शीतल जल प्याऊ लगाई जा रही हैं। निगम द्वारा गजराराजा टंकी, बस स्टेंड रेलवे स्टेशन के पास एवं अन्य स्थानों पर शीतल जल प्याऊ चालू की गई। निगमायुक्त संघ प्रिय ने शहरवासियों से अपील की है कि ग्रीष्मकाल में पानी की कमी को देखते हुए शहरवासी जल का अपव्यय न करें। जितनी आवश्यकता है उतना ही जल का उपयोग करें।

कृषि विश्वविद्यालय में खेलकूद प्रतियोगिताओं का समापन आज

ग्वालियर। कृषि विश्वविद्यालय की अंतर महाविद्यालयीन खेलकूद प्रतियोगिताओं का समापन आज शुक्रवार 28 मार्च को कृषि महाविद्यालय में होगा। खेल अधिकारी डॉ. सी.एस. तोमर ने बताया कि इन प्रतियोगिताओं में कृषि महाविद्यालय ग्वालियर, खंडवा, सीहोर एवं उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर से लगभग 200 विद्यार्थी भाग ले रहे हैं।

खेल प्रतिस्पार्धाओं के तीसरे दिन भी प्रतियोगिताओं का दौर जारी रहा। खिलाड़ियों ने भरपूर उत्साह के साथ प्रतिस्पर्धाओं में भाग लिया। इनमें बॉलीवाल पुरूष वर्ग फाइनल में कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर ने विजेता एवं उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर उपविजेता रहा। खो-खो पुरूष वर्ग फाइनल में कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर ने विजेता एवं उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर उपविजेता रहा। कबड्डी पुरूष वर्ग फाइनल में कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर ने विजेता एवं कृषि महाविद्यालय, सीहोर उपविजेता रहा। कैरम पुरूष वर्ग फाइनल में कृषि महाविद्यालय, खंडवा ने विजेता एवं कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर उपविजेता रहा। कैरम महिला वर्ग फाइनल में कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर ने विजेता एवं कृषि महाविद्यालय, खंडवा उपविजेता रहा। बैडमिंटन महिला वर्ग फाइनल उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर विजेता एवं कृषि महाविद्यालय, ग्वालियर उपविजेता रहा।

अनियमितता मिलने पर दो फर्मों को किया सील्ड

ग्वालियर। खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने अनियमितताएं मिलने पर दो फर्मों को सील्ड कर दिया है। जिनमें एबी रोड ट्रांसपोर्ट नगर स्थित फर्म ग्वालियर इंटरप्राइजेज व एए इंटरप्राइजेज घास मंडी शामिल है।

विभाग की टीम ने एबी रोड ट्रांसपोर्ट नगर स्थित फर्म ग्वालियर इंटरप्राइजेज का निरीक्षण किया गया। मौके पर फर्म का संचालन कर रहे बृजेश शिवहरे के द्वारा पानी की बोतलों को पैक किया जा रहा था। फर्म संचालक के द्वारा थंडर, एक्वा न्यू एवं एजोरा नाम से फ्लेवर्ड प्यूरीफायर वॉटर पानी की बोतले पैक की जा रही थी। मौके पर फर्म संचालक ने फर्म का मालिक गायत्री शिवहरे को बताया और इस संबंध में फूड रजिस्ट्रेशन की कॉपी दी। खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्री सतीश कुमार शर्मा ने निरीक्षण करने पर विभिन्न नाम की एक्वा न्यू एवं एजारो नाम से पैक्ड की जा रही पानी बोतलों के संबंध में पूछताछ की तो उसने बताया की एक्वा न्यू की बोतलों को अनुबंध के द्वारा पैक किया जा रहा है।अनुबंध की कॉपी मांगे जाने पर फर्म संचालक बृजेश ने प्रस्तुत नहीं की। इसके अलावा पानी की बोतलों को संचालन के लिए अन्य आवश्यक दस्तावेज जैसे पानी की रिपोर्ट, कैलिब्रेशन रिपोर्ट, मेडिकल फिटनेस बीआईएस इत्यादि संबंधित दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किये। खाद्य सुरक्षा अधिकारी सतीश कुमार शर्मा ने फर्म संचालक से एक्वा थंडर फ्लेवर प्यूरीफाइड वॉटर का नमूना लिया जाकर शेष पानी की बोतलों की 500 एमएल और एक लीटर वाली 145 कार्टन को जिस की कुल कीमत 17280 है को नियमानुसार जप्त कर पानी की फैक्ट्री के कारोबार को बंद करते हुए सील्ड किया।

खाद्य सुरक्षा विभाग की दूसरी टीम खाद्य सुरक्षा अधिकारी लोकेंद्र सिंह, राजेश गुप्ता, दिनेश निगम एवं निरुपमा शर्मा पानी की बोतलों की पैकिंग करने वाली फर्म एए इंटरप्राइजेज घासमंडी ग्वालियर पर पहुंची जहाँ उक्त फर्म बंद मिलने पर टीम ने फर्म मालिक आकाश मित्तल को फर्म का निरीक्षण कराने के लिए आसपास के लोगों से मोबाइल नंबर लेकर कॉल कर सूचना देते हुए आने को कहा, जिस पर मालिक ने 10 मिनट में आने की बोला। लेकिन करीब एक घंटा इंतजार करने पर भी मालिक उपस्थित नहीं हुआ। जिस पर खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने उक्त फर्म को आगामी आदेश तक के लिए सील्ड किया है।

उपयंत्री सेंगर बने शहर के नोडल अधिकारी सीवर

ग्वालियर। कार्य सुविधा एवं प्रशासनिक दृष्टि से लल्लन सिंह सेंगर संविदा उपयंत्री को वर्तमान कार्य के साथ साथ नवीन दायित्व सौंपे गए हैं। निगम आयुक्त संघ प्रिय के जारी आदेशानुसार लल्लन सिंह सेंगर संविदा उपयंत्री को नोडल अधिकारी सीवर समस्त विधानसभा ग्वालियर एवं ग्वालियर पूर्व तथा सहायक यंत्री का दायित्व वर्तमान में है। वर्तमान कार्य के साथ साथ ही लल्लन सिंह को नोडल अधिकारी सीवर समस्त विधानसभा दक्षिण एवं ग्वालियर ग्रामीण विधानसभा का अतिरिक्त दायित्व सौंपा गया है।

संपादकीय

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले पर सर्वोच्च न्यायालय ने प्रकट किया खेद, न्यायाधीश की टिप्पणियों को बताया असंवेदनशील एवं अमानवीय दृष्टिकोण

कई बार अदालतों के सामने कुछ मामलों में कानून के बारीक बिंदुओं की व्याख्या करने में अड़चन आ जाती है, मगर यह ऐसा कोई मामला नहीं था, जिसमें कोई दिक्कत पेश आई होगी। फिर, अगर कहीं कोई संशय था, तो सुनवाई के बाद चार महीने तक फैसले को सुरक्षित रखा गया था, उस बीच उस पर विचार-विमर्श किया जा सकता था। महिला सुरक्षा से जुड़े मामलों में फैसला देते वक्त अदालतों से घटना, तथ्यों और प्रमाणों पर संवेदनशील तरीके से विचार करने की अपेक्षा की जाती है। मगर विचित्र है कि कई बार निचली अदालतें ऐसे मामलों में पूर्वाग्रहपूर्ण निर्णय सुना देती हैं। इलाहाबाद उच्च न्यायालय का एक नाबालिग के साथ यौन दुर्व्यवहार के मामले में आया फैसला उसी का ताजा उदाहरण है। अदालत ने इस संबंध में फैसला दिया कि संबंधित लड़की के साथ जो किया गया, उसे बलात्कार नहीं कहा जा सकता। उचित ही, स्वतः संज्ञान लेते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने इस फैसले पर रोक लगा दी है। शीर्ष अदालत ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के इस फैसले पर खेद प्रकट करते हुए इसमें संवेदनशीलता की कमी रेखांकित की है और न्यायाधीश की टिप्पणियों को असंवेदनशील एवं अमानवीय दृष्टिकोण वाला बताया है। यह बात किसी को गले नहीं उतर पा रही कि जब पाक्सो कानून में स्पष्ट रूप से किसी बच्चे के साथ गलत हरकतों को आपराधिक कृत्य माना गया है, तब कैसे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के संबंधित न्यायाधीश को न्यायिक विवेचन करते समय यह गंभीर दोष नहीं जान पड़ा। महिलाओं के यौन उत्पीड़न से संबंधित कानूनों में तो उन्हें घूरने, गलत इशारे करने, पीछा करने आदि को भी आपराधिक कृत्य माना गया है। फिर उस लड़की के मामले में हर पहलू पर विचार क्यों नहीं किया गया! यह ठीक है कि कई बार अदालतों के सामने कुछ मामलों में कानून के बारीक बिंदुओं की व्याख्या करने में अड़चन आ जाती है, मगर यह ऐसा कोई मामला नहीं था, जिसमें कोई दिक्कत पेश आई होगी। फिर, अगर कहीं कोई संशय था, तो सुनवाई के बाद चार महीने तक फैसले को सुरक्षित रखा गया था, उस बीच उस पर विचार-विमर्श किया जा सकता था। महिलाओं के सम्मान और गरिमा के प्रति सर्वोच्च न्यायालय संवेदनशील रहा है। इसका बड़ा उदाहरण पिछले वर्ष देखा गया, जब तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश ने कुछ शब्दों को महिला सम्मान के विरुद्ध मानते हुए उनकी जगह सम्मानजनक शब्द सुझाए थे। कुछ अशोभन कहे जाने वाले शब्द, जो प्रायः महिलाओं से जुड़े मामलों में लंबे समय से अदालतों में प्रयुक्त होते आ रहे थे, उन्हें बदल दिया गया था। सर्वोच्च न्यायालय ने ऐसे शब्दों की सूची बना कर देश की सभी अदालतों में प्रसारित किया था। इसके बावजूद अगर इलाहाबाद उच्च न्यायालय के संबंधित न्यायाधीश ने महिला अस्मिता से जुड़े अहम पक्षों को सरसरी ढंग से देखने का प्रयास किया, तो उस पर सवाल उठने स्वाभाविक हैं। इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि कुछ मामलों में पाक्सो और महिला सुरक्षा से जुड़े कानूनों का दुरुपयोग देखा गया है, मगर इसका अर्थ यह नहीं कि इससे किसी को हर महिला के साथ हुए दुर्व्यवहार और यौन शोषण को असंवेदनशील तरीके से देखने की छूट मिल जाती है। पहले ही महिला यौन उत्पीड़न के मामलों में शिकायतें दर्ज कराने को लेकर चुप्पी साध जाने या कदम वापस खींच लेने को लेकर चिंता जताई जाती रही है। फिर, जांच में पूर्वाग्रह, दबाव, साठगांठ आदि के चलते पर्याप्त सबूत न मिल पाने के कारण दोष सिद्धि की दर बहुत कम रहना भी चिंता का विषय है। ऐसे में अगर अदालतें खुद अपने फैसलों में संकुचित दृष्टिकोण दिखाएंगी, तो ऐसे मामलों पर लगाम लगने का भरोसा भला कैसे बन सकेगा।

अच्छा श्रोता सिर्फ अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी साबित होता है फायदेमंद, मनोचिकित्सक की निभाता है भूमिका

“ इस दुनिया में बोलना सभी को आता है, लेकिन सुनना और वह भी धैर्यपूर्वक और पूरी शांति से किसी की बात सुनना, बहुत कम लोगों को आता है। जबकि एक अच्छा श्रोता होना श्रेष्ठ गुण है। कोई भी व्यक्ति अच्छे श्रोता से बात करने में खुशी महसूस करता है, जो उसकी बात को पूरी तन्मयता के साथ सुनता है और उसके बाद उस विषय पर सार्थक संवाद करता है। ”

एक अच्छा श्रोता मनोचिकित्सक की तरह होता है, क्योंकि वह किसी के मन में दबी हुई कड़वी यादों, अनुभव और बातों को बाहर निकाल कर उसके हृदय को भारहीन, पीड़ाहीन कर उसे खुशी और संतुष्टि देता है। यानी अच्छा श्रोता सिर्फ अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए भी फायदेमंद होता है। जब हम किसी से बात कर रहे होते हैं, तो सामने वाले की बात को पूरे ध्यान से सुनने का प्रयास करना चाहिए।

इस दुनिया में बोलना सभी को आता है, लेकिन सुनना और वह भी धैर्यपूर्वक और पूरी शांति से किसी की बात सुनना, बहुत कम लोगों को आता है। जबकि एक अच्छा श्रोता होना श्रेष्ठ गुण है। कोई भी व्यक्ति अच्छे श्रोता से बात करने में खुशी महसूस करता है, जो उसकी बात को पूरी तन्मयता के साथ सुनता है और उसके बाद उस विषय पर सार्थक संवाद करता है। वक्ता का बोलना सार्थक होता है, श्रोता का सुनना सार्थक होता है। अच्छा श्रोता बनना ऐसी कला है, जो सभी को आनी चाहिए, क्योंकि इसके अनेक फायदे हैं। अच्छा श्रोता बन कर ही हम दुनिया की बातों के जरिए उनके अनुभव से दुनिया के बारे में अत्यधिक समझ विकसित कर सकते हैं, उसमें से अपने काम की बातों को ग्रहण कर सकते हैं। मनुष्य का जीवन बहुत छोटा है। वह हर एक बात का अपने जीवन में अनुभव नहीं कर सकता है और न हर परिस्थिति को जी सकता है। कुछ न कुछ हमें दूसरों के जीवन से सीखना पड़ता है। इसके लिए उन्हें समझना और सुनना पड़ता है। इसलिए बहुत जरूरी है कि जब कोई अपना अनुभव या अपने सार्थक विचार हमें सुनाए, तो हम एक अच्छा श्रोता बन कर सुनें। उसके सार तत्त्व को ग्रहण करें और अपने ज्ञान को समृद्ध करें, ताकि उसके अनुभव का भरपूर लाभ हमें भी मिले। मगर यह तभी संभव है जब हम धैर्यपूर्वक किसी की बात को तन्मयता से सुनें। विंस्टन चर्चिल का कहना था कि ‘अगर आप सिर्फ बोलना जानते हैं, तो कभी सफल नहीं हो सकते हैं’। यानी सुनना मनुष्य के लिए बहुत ही फायदेमंद है और वह उसकी सफलता में भी सहयोगी है। कहा भी गया है कि किसी अक्लमंद से बात करना हजार किताबों को पढ़ने के बराबर होता है। तो सिर्फ बात करने से ही काम नहीं बन सकता है, बल्कि उन बातों को ध्यानपूर्वक अपने मन में उतारना भी पड़ता है और उसके लिए अच्छा श्रोता भी बनना पड़ता है।

एक अच्छा श्रोता मनोचिकित्सक की तरह होता है, क्योंकि वह किसी के मन में दबी हुई कड़वी यादों, अनुभव और बातों को बाहर निकाल कर उसके हृदय को भारहीन, पीड़ाविहीन कर उसे खुशी और संतुष्टि देता है। यानी अच्छा श्रोता सिर्फ अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए भी फायदेमंद होता है। जब हम किसी से बात कर रहे होते हैं, तो सामने वाले की बात को पूरे ध्यान से सुनने का प्रयास करना चाहिए। यह शारीरिक-मानसिक दोनों रूप से होना चाहिए। धैर्यपूर्वक सुनने के बाद ही उसका उत्तर या उस पर अपने विचार प्रकट किया जाए, तो हम ज्यादा बेहतर तरीके से अपना विचार प्रकट करते हैं। अगर बिना बात को सुने हम किसी बात पर अपना विचार प्रकट करते हैं, तो वह अर्थहीन होगा, क्योंकि जब हम किसी की बात को पूरी तरह सुनेंगे नहीं, तो उस बात का सटीक उत्तर कहां से दे सकते हैं। अक्सर लोग सिर्फ अपनी बातों का एकालाप करते रहते हैं। एकालाप का अर्थ है सिर्फ अपनी बात कहते जाना, सामने वाले की बिल्कुल नहीं सुनना। जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं होना चाहिए। यह बात बहुत अजीब लग सकती है, लेकिन यही सच है। हर कोई अच्छा श्रोता नहीं होता है और न ही उसके पास अच्छा श्रोता बनने की कला होती है। जिस प्रकार अच्छा लिखने के लिए काफी कुछ पढ़ना पड़ता है, इसी प्रकार एक अच्छा वक्ता बनने के लिए हमें पहले अच्छा श्रोता बनना पड़ता है। कुछ लोगों के भीतर इतना भी शिष्टाचार नहीं होता है कि वे पूरी बात को सुनने के बाद अपनी बात रखें। वे बात को बीच में ही काट कर या अनसुना करके अपनी बात कहना शुरू कर देते हैं। शुरूआत से ही वे बातों पर न पूरी तरह ध्यान दे रहे होते हैं और न सुन रहे होते हैं। ऐसे में वक्ता को घोर निराशा होती है। जबकि अगर कोई कुछ बोल रहा है या अपने विचार प्रस्तुत कर रहा है, तो उसको अपने विचार समाप्त करने देना जरूरी होता है। बीच में टोकने से यह पता चलता है कि हम वास्तव में उनके विचारों की परवाह नहीं करते हैं। या उनके लिए हमारे अंदर सम्मान की कमी है, जिसके कारण हम उन पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। वहीं अगर कोई हमारी बात और हमारे विचारों में दिलचस्पी लेता है, तो हम खुश, संतुष्ट और अपने आप को उत्साहित और प्रेरित महसूस करते हैं। श्रोता बनने के लिए हमें धैर्यपूर्वक दूसरों को अपनी बात कहने के लिए उत्साहित करना चाहिए। उनकी बातों में दिलचस्पी लेकर उनसे उनकी बात से संबंधित सवाल पूछने चाहिए। बीच में बात काट कर अशिष्टता नहीं करनी चाहिए और न ही विषय बदल कर अपनी अरुचि दिखानी चाहिए। यह हमारे अच्छा श्रोता बनने के मार्ग में बाधक बनता है। हम खुद यह विचार करके देखें कि हम किसी से अपनी पीड़ा, मनोभावना बांट रहे हैं और वह व्यक्ति हमारी बात को काट कर या अनसुना करके अपनी बात कहना शुरू कर दे, तो क्या भविष्य में ऐसे व्यक्ति से हम कोई बात कर पाएंगे? हमारा थोड़ा-सा प्रयास हमें अच्छा श्रोता बना सकता है और इस कला को विकसित करने के कई तरीके हैं। या तो हम स्वयं इस दिशा में प्रयास करें या फिर हम किसी चिकित्सक की मदद लेकर अपने इस कौशल पर काम कर सकते हैं।

शहरी विकास का सही तरीका, अर्बन प्लानिंग के लिए ठोस प्रयास आवश्यक

हमें शहरी नियोजन में इन्हीं तीन गुणों का समावेश करना होगा। भारत के भविष्य निर्माण के लिए शहरी प्रबंधन शिक्षा एक महत्वपूर्ण निवेश है। हमारे पास एक बेहतर भारत की कल्पना और रूपरेखा है। बस अपने पेशेवरों को शहरी प्रबंधन के कौशल से निपुण बनाना है। तभी शहरी भारत 2.0 की भव्यता पूर्ण रूप से प्रकट होगी और हम भविष्य के शहरों को पुनर्परिभाषित कर सकेंगे। पांच ट्रिलियन (लाख करोड़) डॉलर की इकोनमी बनने की भारत की अभिलाषा में स्थायी और समावेशी शहरी विकास की आकांक्षा एक अपरिहार्य तत्व है। यह आकांक्षा तीव्र शहरीकरण, पर्यावरण परिवर्तन और सामाजिक असमानता से तत्काल निपटने से संबंधित है। इन जटिल चुनौतियों से निपटने के लिए देश को कुशल प्लानरों और ऐसे पेशेवरों की जरूरत है, जो पर्यावरण अनुकूल, सभी को समान अवसर देने वाले और सशक्त शहरी वातावरण को सार्थक दिशा देने की क्षमता के धनी हों। भारत में प्लानिंग एजुकेशन पर फिर से विचार किया जाना चाहिए। शहरी विकास के परिदृश्य को नए नजरिये से देखना आवश्यक हो गया है। इसके साथ ही प्लानिंग एजुकेशन का रूपांतरण भी जरूरी है। अब हमें प्लानिंग के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक आयामों के व्यापक परिदृश्य वाला दृष्टिकोण अपनाना होगा। इस दिशा में परिणाम आधारित शिक्षा की पहल उपयोगी होगी। इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम कुछ इस तरह निर्धारित करना होगा कि वह रोजगार बाजार की तेजी से बढ़ती मांग के अनुरूप हो। उससे ऐसे स्नातक निकलें, जो केवल सैद्धांतिक ज्ञान से ही लैस न हों, बल्कि उनके पास तकनीकी, विश्लेषणात्मक और संवाद के ऐसे कौशल हों, जो वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से जूझ सकें। इसके साथ ही उनमें नीतियों के विश्लेषण की क्षमता हो और वे सामाजिक समानता और आर्थिक विकास की बारीकियों को समझते हों। प्लानिंग एजुकेशन को समाजशास्त्र, आर्थिकी, पर्यावरण विज्ञान और तकनीक के इस्तेमाल जैसे विषयों की समझ और उन्हें समग्र रूप से अपनाने का पहलू पाठ्यक्रम में शामिल होना चाहिए। शहरी प्रबंधन, शहरी वित्त, परियोजना विकास, नीति नियोजन तथा विश्लेषण जैसे विषय आधुनिक शहरी परिदृश्य की जटिलताओं से निपटने के लिए बेहद आवश्यक हैं। संस्थानों को अस्थायी शिक्षकों के बजाय प्रतिबद्ध और पूर्णकालिक शिक्षकों में निवेश करना चाहिए। पर्यावरण परिवर्तन, समस्याओं से निपटने के लिए शहरों की क्षमता

निर्माण जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए एकीकृत पारिस्थितिकी विशेषज्ञता की जरूरत है। इस दिशा में इंस्टीट्यूट आफ टाउन प्लानर्स जैसे नियामकीय निकाय यह सुनिश्चित करते हैं कि प्लानिंग का काम संकीर्ण रियल एस्टेट हितों के बजाय व्यापक जनहित को प्राथमिकता दे। इसमें सभी पक्षों के साथ समन्वय के लिए आवश्यक है कि प्लानरों के पास मजबूत प्रबंधकीय कौशल हो, जिसमें विवादों का समाधान, बातचीत, मध्यस्थता और पैरवी शामिल है। नियोजन संबंधी ज्ञान में वैज्ञानिक नजरिया, नैतिकता और सौंदर्यबोध भी जरूरी है। प्लानरों को नवाचारी और समुदायों के सांस्कृतिक तथा सामाजिक ताने-बाने के प्रति भी संवेदनशील होना चाहिए। प्लानिंग के काम में सामाजिक न्याय का महत्व समझने के लिए मेडिकल शिक्षा एक अच्छा उदाहरण है। हम डाक्टरों को इस तरह तैयार करते हैं कि वे लोगों के जीवन की रक्षा करने की महती जिम्मेदारी का निर्वहन कर सकें।

उनकी शिक्षा और प्रशिक्षण में लगभग दस साल लगते हैं। इसके बाद ही वे स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए तैयार होते हैं। दूसरी ओर अर्बन प्लानर हैं, जिन पर पूरे समुदाय के सुगम एवं सुखद जीवन का जिम्मा होता है। क्या उन्हें तैयार करने के लिए केवल दो साल काफी हैं। मेडिकल शिक्षा की तरह अर्बन प्लानिंग को भी मात्र एक डिग्री तक सीमित नहीं होना चाहिए। हमें प्लानरों को लगातार सीखने की प्रक्रिया से गुजारना होगा। अर्बन प्लानिंग में विशेषज्ञता के कोर्स होने चाहिए। इसी से हमारे प्लानर नवाचार और टिकाऊ शहरी विकास की अग्रणी पंक्ति में रहेंगे। शहरी नियोजन के इस नए युग में जोर तकनीकी विशेषज्ञता पर होना चाहिए। निर्णय लेने की प्रभावशाली प्रक्रिया और समन्वय के लिए साफ्ट स्किल्स का विकास जरूरी है। इसमें संवाद का महत्व बढ़ जाता है। कांट्रैक्ट मैनेजमेंट और खरीद के मामलों में इसकी अधिक जरूरत होती है। अर्बन प्लानिंग को गंभीर और समर्पित पेशे के रूप में स्थापित करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों, पेशेवर समूहों और प्रैक्टिशनर्स सभी की ओर से ठोस प्रयास आवश्यक हैं।

निरंतर सीखने की संस्कृति, विशेषज्ञता और जरूरी साफ्ट स्किल के साथ प्लानिंग एजुकेशन ऐसे पेशेवर तैयार कर सकती है, जो शहरी विकास की बहुआयामी चुनौतियों का सामना कर सकें। शहरी नियोजन के प्रति ऐसा दृष्टिकोण न केवल आज की जरूरतों की पूर्ति के लिए है, बल्कि यह भविष्य के हमारे शहरों को तैयार करने में भी मदद करेगा। गुणवत्तापरक जीवन, पर्यावरण अनुकूलता और आर्थिक विकास के त्रिआयामी लक्ष्य को हासिल करने के लिए हर फैसले और कार्य में उचित संतुलन और सटीकता चाहिए। शहरी नियोजकों को शासन, वित्त, योजना, नवाचार, तकनीक में महारत हासिल करनी होती है। हमारे प्लानर सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा से प्रेरणा ले सकते हैं। सरस्वती ज्ञान की देवी हैं, लक्ष्मी समृद्धि की और दुर्गा शक्ति की। हमें शहरी नियोजन में इन्हीं तीन गुणों का समावेश करना होगा। भारत के भविष्य निर्माण के लिए शहरी प्रबंधन शिक्षा एक महत्वपूर्ण निवेश है। हमारे पास एक बेहतर भारत की कल्पना और रूपरेखा है। बस अपने पेशेवरों को शहरी प्रबंधन के कौशल से निपुण बनाना है। तभी शहरी भारत 2.0 की भव्यता पूर्ण रूप से प्रकट होगी और हम भविष्य के शहरों को पुनर्परिभाषित कर सकेंगे।

सांसदों का आचरण, लोकसभा अध्यक्ष को बार-बार देनी पड़ रही नसीहत

लोकसभा अध्यक्ष को एक बार फिर सदन में सांसदों के आचरण पर नसीहत देनी पड़ी। इस बार यह नसीहत राहुल गांधी के संदर्भ में देनी पड़ी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने राहुल गांधी की ओर संकेत करते हुए उनसे सदन की गरिमा बनाए रखने को कहा। उनकी टिप्पणी से यह तो स्पष्ट नहीं हुआ कि वह उनकी किस गतिविधि को रेखांकित कर रहे थे

गत दिवस लोकसभा अध्यक्ष की नसीहत के जवाब में राहुल गांधी ने उन पर यह आरोप लगाया कि उन्हें बोलने का अवसर नहीं दिया जा रहा। उन्होंने ऐसा इसलिए भी कहा क्योंकि लोकसभा अध्यक्ष की टिप्पणी से यह साफ नहीं हुआ कि वह उनके किस आचरण की ओर संकेत कर रहे थे। बेहतर हो कि सत्तापक्ष और विपक्ष इस पर मंथन करें

लोकसभा अध्यक्ष को एक बार फिर सदन में सांसदों के आचरण पर नसीहत देनी पड़ी। इस बार यह नसीहत राहुल गांधी के संदर्भ में देनी पड़ी। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने राहुल गांधी की ओर संकेत करते हुए उनसे सदन की गरिमा बनाए रखने को कहा। उनकी टिप्पणी से यह तो स्पष्ट नहीं हुआ कि वह उनकी किस गतिविधि को रेखांकित कर रहे थे, लेकिन उन्होंने जिस तरह यह कहा कि इस सदन में पिता-पुत्री, माता-पुत्री एवं पति-पत्नी सदस्य रहे हैं और वह नेता विपक्ष से यह अपेक्षा करते हैं कि उनकी ओर से नियम 349 के अनुरूप आचरण किया जाए,उससे यही लगता है कि उन्हें उनका कोई कृत्य सदन की गरिमा के अनुकूल नहीं लगा। अब लोकसभा अध्यक्ष से आए दिन यह सुनने को मिलता है कि सांसद सदन में मर्यादा और शालीनता के मानदंड बनाए रखें। गत

दिवस तो उन्होंने यह भी कहा कि उनके संज्ञान में ऐसी कई घटनाएं आई हैं, जब सांसदों का आचरण सदन की उच्च परंपराओं के अनुरूप नहीं रहा। यह पहली बार नहीं है, जब संसद में सांसदों के आचरण को लेकर सवाल उठे हों और इससे संबंधित नियम 349 का उल्लेख हुआ हो। अभी चंद दिन पहले जब द्रमुक सांसद लोकसभा में नारे लिखी टीशर्ट पहनकर आए थे, तब भी इस नियम का हवाला देकर उनसे मर्यादा में रहने को कहा गया था। इसी तरह पिछले वर्ष जब राहुल गांधी लोकसभा में फोटो लेकर पहुंचे थे और उन्होंने उसे अपने संबोधन के समय लहराया था, तब भी इस नियम का उल्लेख किया गया था। इसमें संदेह है कि लोकसभा में सांसदों की ओर से सदन की मर्यादा के अनुरूप आचरण न करने पर नियम 349 का उल्लेख करने से उनके कार्य-व्यवहार में सुधार आ जाएगा, क्योंकि ससंद के भीतर नारे लिखे पोस्टर लहराने, नारेबाजी करने के मामले आए दिन देखने को मिलते हैं। जब उन्हें ऐसा करने से रोका-टोका जाता है और सदन की मर्यादा का पालन करने को कहा जाता है तो वे इस आरोप के साथ सामने आ जाते हैं कि उनकी अभिव्यक्ति की आजादी का गला घोटा जा रहा है। इन दिनों तो यह आरोप बहुत आम हो गया है। ऐसा क्यों है, इस पर विचार होना चाहिए। गत दिवस लोकसभा अध्यक्ष की नसीहत के जवाब में राहुल गांधी ने उन पर यह आरोप लगाया कि उन्हें बोलने का अवसर नहीं दिया जा रहा। उन्होंने ऐसा इसलिए भी कहा, क्योंकि लोकसभा अध्यक्ष की टिप्पणी से यह साफ नहीं हुआ कि वह उनके किस आचरण की ओर संकेत कर रहे थे। बेहतर हो कि सत्तापक्ष और विपक्ष इस पर मंथन करें कि संसद को सही तरीके से कैसे चलाया जाए। यह तभी संभव है, जब दोनों पक्ष एक-दूसरे को समझेंगे। ध्यान रहे कि ताली एक हाथ से नहीं बजती।

आज के दौर में रंग-भेद का लोग हो रहे शिकार, शारदा मुरलीधरन पर की गई अभद्र टिप्पणी इसका जीता जागता प्रमाण

नस्ल और रंग के आधार पर भेदभाव पूरी दुनिया में चिंता का विषय है। भारतीय समाज भी इससे मुक्त नहीं है। सदियों से इस तरह के भेदभाव में महिलाएं कुछ ज्यादा ही निशाने पर होती आई हैं। दुख की बात है कि न केवल शिक्षित लड़कियां, बल्कि बड़े ओहदे पर आसीन महिलाएं भी इससे बच नहीं पाई हैं।

हम बेशक आधुनिक कहलाने में गर्व महसूस करते हों, लेकिन स्त्रियों के प्रति, खासकर उनके रंग-रूप को लेकर सोच आज भी नहीं बदली है। उनकी सफलता को रंग-रूप के चश्मे से देखना विकृत मानसिकता का परिचायक है। नस्ल और रंग के आधार पर भेदभाव पूरी दुनिया में चिंता का विषय है। भारतीय समाज भी इससे मुक्त नहीं है। सदियों से इस तरह के भेदभाव में महिलाएं कुछ ज्यादा ही निशाने पर होती आई हैं। दुख की बात है कि न केवल शिक्षित लड़कियां, बल्कि बड़े ओहदे पर आसीन महिलाएं भी इससे बच नहीं पाई हैं। भारतीय स्त्रियां रंग-रूप को लेकर जीवन भर चुभने वाली टिप्पणियों का सामना करती हैं। जबकि यह हकीकत है कि हजारों-लाखों महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और संघर्ष से हर क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। केरल की मुख्य सचिव शारदा मुरलीधरन उनमें से एक हैं। हालांकि अपने सांवले रंग को लेकर समाज के पूर्वाग्रह से वे नहीं बच सकीं। सोशल मीडिया के एक मंच पर पिछले दिनों उन्हें अपने बारे में अभद्र टिप्पणी पढ़ने को मिली। स्वाभाविक रूप से यह उन्हें नागवार

गुजरी। उन्होंने लिखा कि किसी ने मेरे मुख्य सचिव के कार्यकाल की तुलना मेरे पति के कार्यकाल से करते हुए लिखा कि यह उतना ही काला है, जितना मेरे पति गोरे थे। मगर मुझे अपने काले रंग से कोई दिक्कत नहीं। मुझे यह रंग पसंद है। उचित ही उनकी इस प्रतिक्रिया के बाद विमर्श शुरू हो गया है। हम बेशक आधुनिक कहलाने में गर्व महसूस करते हों, लेकिन स्त्रियों के प्रति, खासकर उनके रंग-रूप को लेकर सोच आज भी नहीं बदली है। उनकी सफलता को रंग-रूप के चश्मे से देखना विकृत मानसिकता का परिचायक है। यह निराशाजनक है कि किसी महिला की योग्यता को उसके पति के रंग से परखा जाए। शारदा मुरलीधरन ने किसी व्यक्ति की अनुचित और अरुचिकर टिप्पणी का जवाब देकर पूर्वाग्रहों पर कठोर प्रहार किया है। हालांकि उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी बात रखने के बाद उसे हटा दिया था, लेकिन बाद में कुछ शुभचिंतकों के यह कहने पर लिखा कि इस विषय पर सामाजिक विमर्श होना चाहिए। इसका सकारात्मक पहलू यह है कि रंग के मुद्दे पर शारदा के लिखे विस्तृत जवाब का बड़ी संख्या में लोगों ने स्वागत किया है। इससे पता चलता है कि कुछ लोग बेशक संकीर्ण सोच रखते हों, लेकिन समाज बदल रहा है।

मेसी 14 साल बाद भारत में फ्रेंडली मैच खेलेंगे

अर्जेंटीना टीम कोच्चि आएगी, नवंबर में केरल सरकार ने घोषणा की थी, अब एसोसिएशन का कन्फर्मेशन

नई दिल्ली। लियोनेल मेसी 14 साल बाद भारत में फ्रेंडली मैच खेलने के लिए अर्जेंटीना टीम के साथ आएंगे। बुधवार को अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन इसकी घोषणा की। इससे पहले मेस्सी ने 2011 में भारत का दौरा किया था, जब अर्जेंटीना ने कोलकाता के साल्ट लेक स्टेडियम में वेनेजुएला के खिलाफ वर्ल्ड कप क्वालिफिकेशन मैच खेला था।

केरल के खेल मंत्री वी अब्दुरहीमन ने पिछले साल नवंबर में अर्जेंटीना की टीम का केरल का दौरा करने और कोच्चि में दो दोस्ताना मैच खेलने की घोषणा की थी।

एचसीबीसी इंडिया ने अर्जेंटीना फुटबॉल एसोसिएशन के साथ किया सहयोग एचएसबीसी इंडिया बुधवार को भारत में फुटबॉल के सहयोग और प्रचार के लिए अर्जेंटीना की टीम का आधिकारिक साझेदार बन गया। उसने घोषणा की कि मैच अक्टूबर में आयोजित किए जाएंगे।

एचएसबीसी इंडिया ने बताया कि इस साझेदारी के तहत दिग्गज खिलाड़ी लियोनेल मेसी समेत अर्जेंटीना की

राष्ट्रीय फुटबॉल टीम अक्टूबर 2025 में एक अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी मैच खेलने के लिए भारत का दौरा करेगी।

अर्जेंटीना ने 2022 में 36 साल बाद जीता था फुटबॉल वर्ल्ड कप खिताब अर्जेंटीना ने 2022 में 36 साल बाद फुटबॉल वर्ल्ड कप खिताब जीता था। इससे पहले अर्जेंटीना 1986 में विश्प कप जीता था। कतर में खेले गए फीफा वर्ल्ड कप फाइनल में अर्जेंटीना ने फ्रांस को पेनल्टी शूट आउट में 4-2 से हरा दिया।

तय 90 मिनट तक दोनों टीमें 2-2 की बराबरी पर रही थी। एक्स्ट्रा टाइम के बाद मुकाबला 3-3 की बराबरी पर रहा था। इसके बाद पेनल्टी शूटआउट से फैसला हुआ। फाइनल में मेसी ने दो गोल किए। वहीं, फ्रांस के लिए किलियन एमबाप्पे ने हैट्रिक जमाई थी। अर्जेंटीना 1978 में पहली बार वर्ल्ड चैंपियन बना था। 2026 वर्ल्ड कप के लिए अर्जेंटीना क्वालिफाई कर चुका अर्जेंटीना ने 26 मार्च को ब्राजील को 4-1 से हरा कर 2026 वर्ल्ड कप कप के लिए क्वालिफाई किया है। इस मैच में लियोनेल मेसी नहीं खेले थे। ब्यूनस आयर्स में खेले गए इस मुकाबले में ब्राजील की टीम बिल्कुल फीकी नजर आई।

अर्जेंटीना के लिए जूलियन अल्वारेज, एन्जो फर्नांडेज, एलेक्सिस मैक एलिस्टर और गुलियानो सिमियोने ने गोल किए। ब्राजील की तरफ से इकलौता गोल मैथ्यूस कुन्हा ने किया।

टॉम लैथम पाकिस्तान के खिलाफ वनडे सीरीज से बाहर

दाहिने हाथ में फ्रैक्चर, हेनरी निकोल्स टीम में शामिल

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के विकेटकीपर-बल्लेबाज टॉम लैथम चोट की वजह से पाकिस्तान के खिलाफ आगामी वनडे सीरीज से बाहर हो गए है। प्रैक्टिस के दौरान उनका दाहिना हाथ फ्रैक्चर हो गया है।

उनकी जगह बल्लेबाज हेनरी निकोल्स को टीम में शामिल किया गया है। वहीं लैथम की गैरमौजूदगी में माइकल ब्रेसवेल टीम की कमान संभालेंगे। दोनों टीमें 29 मार्च से 3 मैचों की वनडे सीरीज में भिड़ेंगी। सीरीज का आखिरी मुकाबला 5 अप्रैल को खेला जाएगा।

टॉम नेट प्रैक्टिस के दौरान चोटिल हुए थे दरअसल, लैथम को इस हफ्ते नेट पर बल्लेबाजी करते समय चोट लग गई थी। एक्स-रे के बाद पता चला कि उनके हाथ में फ्रैक्चर है। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने बताया कि, उन्हें कम से कम चार हफ्ते मैदान से दूर रहना होगा।

हेनरी निकोल्स रिप्लेस करेंगे, घरेलु

टूर्नामेंट से वापसी की हेनरी निकोल्स अभी तक 78 वनडे मैच खेल चुके है। उन्होंने अपने काफ में आई चोट के बाद छह पारियों में पांच अर्द्धशतक बनाकर घरेलू क्रिकेट से वापसी की है। वे इस मैच में लैथम की जगह बल्लेबाजी करेंगे।बल्लेबाज विल यंग भी दूसरे-तीसरे मैच से बाहर इस बीच सलामी बल्लेबाज विल यंग अपनी प्रेगनेंट पत्नी जेनिफर बर्मिंघम के साथ रहने के लिए दूसरे और तीसरे वनडे मैच से बाहर रहेंगे। यंग शनिवार को नेपियर में सीरीज का पहला मैच खेलेंगे। जिसके बाद उनकी जगह कैंटरबरी के नए बल्लेबाज राइस मारिउ को शामिल किया जाएगा, जिन्हें पहली बार टीम में शामिल किया गया है।

न्यूजीलैंड ने टी-20 सीरीज अपने नाम की न्यूजीलैंड ने टी-20 सीरीज के 5वें और आखिरी मुकाबले में पाकिस्तान को 8 विकेट से हरा दिया था। जिसके बाद टीम ने 4-1 से सीरीज को जीत लिया। बुधवार को वेलिंग्टन में कीवी टीम ने 129 रन का टारगेट 10 ओवर में 2 विकेट पर हासिल कर लिया। पाकिस्तान ने 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 128 रन बनाए।

बॉक्सर स्वीटी बूरा की तबीयत बिगड़ी, पैनिक अटैक के बाद अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली। हिसार की पूर्व वर्ल्ड चैंपियन बॉक्सर स्वीटी बूरा की बुधवार को तबीयत बिगड़ गई। पैनिक अटैक आने के बाद उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्वीटी ने इसकी जानकारी खुद सोशल मीडिया पर दी। इससे पहले 23 मार्च को स्वीटी को तेज बुखार आया था। तबीयत खराब होने के बाद उन्होंने 24 मार्च को रोहतक आईजी से मुलाकात का प्रोग्राम कैंसिल कर दिया था। 24 मार्च को पति दीपक हुड्डा से थाने में मारपीट करने का वीडियो सामने आने के बाद स्वीटी बूरा ने कहा था कि मुझे जानबूझकर हिंसात्मक दिखाया जा रहा है, जबकि दीपक हुड्डा ही मुझसे

मारपीट करते थे। 15 मार्च को थाने में दीपक ने मुझे वीडियो दिखाने के लिए बुलाया था। जो मारपीट की वीडियो वायरल हुई, उसमें शुरू और आखिरी का हिस्सा गायब है, जिसमें दीपक मुझे अपशब्द कह रहे हैं।

बाद में मुझे पैनिक अटैक भी आया, लेकिन वह हिस्सा गायब कर दिया गया है। थाने का वीडियो सार्वजनिक होने का मतलब यह है कि इस केस में दीपक के साथ हिसार एसपी मिले हुए हैं। स्वीटी बूरा के पति से मारपीट का डेढ़ मिनट का वीडियो सामने आया था। जिसमें दिख रहा था कि हिसार के पुलिस थाने में पहले स्वीटी और दीपक के बीच बहस हुई। इसके बाद स्वीटी हाथ पर जोर से ताली मारते हुए खड़ी हुई और सामने कुर्सी पर बैठे दीपक हुड्डा पर हमला कर दिया। स्वीटी थाने में सबकी मौजूदगी में दीपक का गला दबा रही हैं। उन्हें पकड़कर झिंझोड़ रही हैं।

गत चैंपियन मीनाक्षी और अनामिका 8वीं एलीट महिला राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप के फाइनल में

ग्रेटर नोएडा। गत चैंपियन मीनाक्षी और अनामिका हुड्डा ने बुधवार को विपरीत अंदाज में जीत के साथ 8वीं एलीट महिला राष्ट्रीय मुक्केबाजी चैंपियनशिप के फाइनल में जगह बना ली है । मौजूदा मिनिममवेट (45-48 किग्रा) चैंपियन मीनाक्षी (एआईपी) अजेय रहीं। उन्होंने दिल्ली की संजना को तीसरे राउंड में आरएससी जीत के साथ हराकर फाइनल में जगह बनाई। इस बीच, लाइट फ्लाईवेट (48-51 किग्रा) खिताबधारी अनामिका हुड्डा (आरएसपीबी) को अब तक की सबसे कठिन परीक्षा का सामना करना पड़ा। उन्होंने तमिलनाडु की कलैवानी एस को 4-3 के स्प्लिट डिसीजन से हराया। मीनाक्षी अब सिक्किम की यासिका राय से भिड़ेंगी, जबकि अनामिका का सामना हरियाणा की तमन्ना से होगा। उत्तर प्रदेश बॉक्सिंग एसोसिएशन के सहयोग से भारतीय

मुक्केबाजी महासंघ द्वारा आयोजित यह चैंपियनशिप 20 से 27 मार्च, 2025 तक उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा में शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में हो रही है।

सप्ताह भर चलने वाले इस टूर्नामेंट में 24 राज्य इकाइयों के 180 मुक्केबाज दस भार श्रेणियों में प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जो विश्व मुक्केबाजी तकनीकी और प्रतियोगिता नियमों का पालन करता है। इसमें एक मिनट के ब्रेक के साथ तीन-तीन मिनट के राउंड शामिल हैं।

जैस्मीन लेम्बोरिया (एसएससीबी) ने एक बार फिर अपना दबदबा साबित करते हुए एक और आरएससी जीत हासिल की।

इस बार उन्होंने फेदरवेट (54-57 किग्रा) सेमीफाइनल में पंजाब की विशाखा वर्टिया के खिलाफ राउंड 3 में हराया। राष्ट्रमंडल खेलों की पदक विजेता ने अब तक अपनी प्रतिद्वंद्वियों को अथक शक्ति और सटीकता के साथ परास्त किया है, और अब उनका सामना हरियाणा की प्रिया से होगा, जिन्होंने रेलवे की पूनम को हराकर रोमांचक खिताबी मुकाबले में जगह बनाई है। 60-65 किग्रा वर्ग में, विश्व चैंपियनशिप की रजत पदक विजेता सोनिया लाठेर ने महाराष्ट्र की पूनम कैथवास पर 5-0 की जीत के साथ अपने खिताबी अभियान को बरकरार रखा। संजू के दमदार प्रदर्शन के बाद फाइनल में उनका सामना संजू (एआईपी) से होगा।

व्यापार

हुरुन रिच लिस्ट : मुकेश अंबानी देश में सबसे अमीर, नेटवर्थ 8.6 लाख करोड़

अडाणी दूसरे नंबर पर एचसीएल की रोशनी नाडार पहली बार टॉप-10 में

नई दिल्ली। हुरुन ग्लोबल रिच लिस्ट में रिलायंस इंडस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने भारत के सबसे अमीर व्यक्ति का खिताब बरकरार रखा है। दूसरे नंबर पर अडाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडाणी है। वे भारत के सबसे बड़े वेल्थ गेनर है। उनकी नेटवर्थ में 13 प्रतिशत (1 लाख करोड़) की बढ़ोतरी हुई है।

एचसीएल की रोशनी नाडार तीसरे नंबर पर है। वह भारत के टॉप 10 सबसे अमीर व्यक्तियों में इकलौती महिला हैं। हाल ही में एचसीएल के फाउंडर शिव नाडार ने बेटी रोशनी को कंपनी की 47 प्रतिशत हिस्सेदारी ट्रांसफर की थी। इस कारण पहली बार वह अमीरों की टॉप टेन लिस्ट में शामिल हुई हैं।

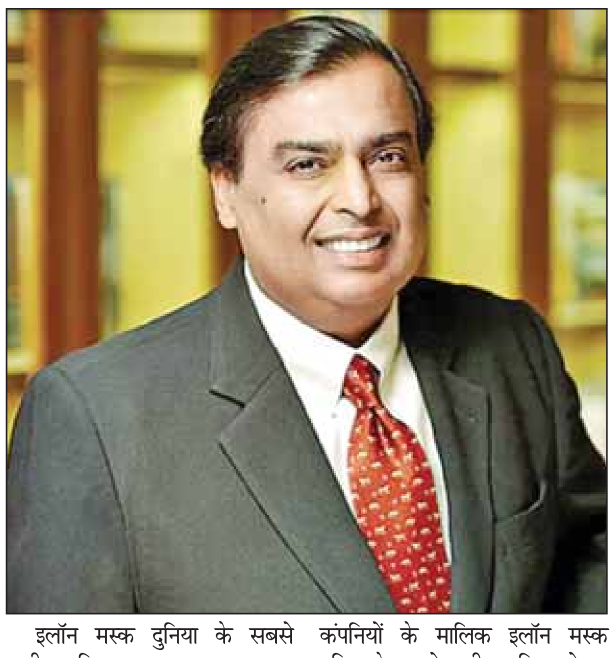

इलॉन मस्क दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति

टेस्ला और स्पेसएक्स जैसी कंपनियों के मालिक इलॉन मस्क दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बने हुए हैं। डोनाल्ड ट्रम्प के दोबारा अमेरिकी राष्ट्रपति चुने जाने के बाद मस्क की नेटवर्थ में 82 प्रतिशत (189 बिलियन डॉलर) की बढ़ोतरी हुई है। अमेजन के फाउंडर जेफ बेजोस दूसरे नंबर पर है।

1999 में ब्रिटिश अकाउंटेंट ने हुरुन लिस्ट की शुरुआत की थी

हुरुन एक रिसर्च ऑर्गनाइजेशन है जो दुनियाभर में वेल्थ, आंत्रप्रेन्योरशिप और इकोनॉमिक ट्रेंड्स पर केंद्रित है। ऑफिशियली इसे हुरुन रिसर्च इंस्टीट्यूट के रूप में जाना जाता है। इसकी स्थापना 1999 में ब्रिटिश अकाउंटेंट और शोधकर्ता रूपर्ट हूगेवेरफ ने की थी।

हुगेवेरफ, जिन्हें उनके चीनी नाम (हू रुन) से भी जाना जाता है। इन्होंने देश के सबसे धनी व्यक्तियों की पहचान करने और उन्हें रैंक करने के लिए चीन में हुरुन की स्थापना की थी। पिछले कुछ वर्षों में, यह एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त संस्था के रूप में विकसित हुई है।

भारत देश की आत्मा गांव में बसती है: महेंद्र सिंह

– गुर्जा आश्रम पर होली मिलन व फग उत्सव आयोजित

ग्वालियर। आज भी भारत देश की आत्मा गांव में बसती है तथा गांव से ही एक राष्ट्र का निर्माण होता है। यह बात गुरूवार को भोपाल प्रभारी व पूर्व अध्यक्ष बीज विकास निगम महेंद्र सिंह यादव ने गुर्ज आश्रम भुसावली में होली मिलन समारोह तथा फग उत्सव कार्यक्रम में कही। पूर्व अध्यक्ष बीज विकास

निगम महेंद्र सिंह यादव ने कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार द्वारा कई योजनाओं के माध्यम से पर्यावरण बचाने के लिए कई मुहिम चलाई जा रही है। यही संदेश फग उत्सव के माध्यम से लोकगायक दे रहे हैं। भगवान कृष्ण और राम के ऊपर धार्मिक फग गाकर हिंदू धर्म का प्रचार प्रसार किया जा रहा है तो वहीं जल बचाओ व वन लगाओ का संदेश दिया जा रहा है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये पूर्व विधायक रामबरन सिंह गुर्जर ने कहा कि यहां प्राचीन सिद्ध स्थान गुर्जा आश्रम महात्माओं की तपस्थली रही है। लोग यहां दूर-दूर से आते हैं तथा इस आश्रम के प्रति लोगों की धार्मिक भावना जुड़ी हुई है इसलिए यहां होली मिलन समारोह रखा गया। आधा सैकड़ा गांव से हजारों की संख्याओं में लोग मौजूद हुए। एक दूसरे को होली की बधाई एवं शुभकामनाएं दी। यहां बता दें कि यह कार्यक्रम श्रीकृष्ण योग पीठ गोविंद मठ वृंदावन मुरार द्वारा आयोजित किया गया। इस अवसर पर पुजारी सूरदास महाराज एवं बोरेश्वर धाम वाले पुजारी सतीश गोस्वामी, भागीरथ पाल, राम अवतार शिरोमणि, देवेंद्र गुर्जर, रघुनाथ सिंह गुर्जर, हरिओम सरपंच आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

ऑल इंडिया बार परीक्षा में अमन जैन ने सफलता हासिल की

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/अम्बाह। ऑल इंडिया बार काउंसिल की 19वीं बार परीक्षा का परिणाम शुक्रवार को घोषित हुआ। अम्बाह जैन समाज के युवा समाजसेवी दिलीप जैन के बेटे एडवोकेट अमन जैन ने इस परीक्षा में सफलता हासिल की है। यह परीक्षा 22 दिसंबर को आयोजित की गई थी। अमन की इस सफलता से पूरे अम्बाह क्षेत्र में खुशी का माहौल है। बार काउंसिल की यह परीक्षा देश भर के वकीलों के लिए एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर मानी जाती है। अमन की इस सफलता पर स्थानीय लोगों ने उसे बधाई प्रेषित की है।

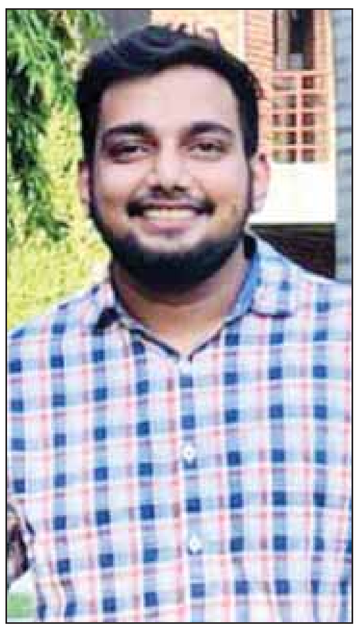

आरबीआई ने एचडीएफसी और पंजाब एण्ड सिंध बैंक पर जुर्माना लगाया

रेगुलेटरी नियमों के उल्लंघन के लिए एचडीएफसी पर 75 लाख पीसीबी पर 68 लाख फाइन

नई दिल्ली। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने सबसे बड़े प्राइवेट सेक्टर बैंक एचडीएफसी और पंजाब एंड सिंध बैंक पर फाइन लगाया है। रेगुलेटरी नियमों के उल्लंघन करने के चलते ये फाइन लगा है।

एचडीएफसी बैंक पर केवाईसी के नियमों का पालन नहीं करने के लिए 75 लाख रुपए का जुर्माना लगा। वहीं पंजाब एंड सिंध बैंक पर लार्ज एक्सपोजर और फाइनेंशियल इन्क्लूजन गाइडलाइन की रिपोर्टिंग में चूक के लिए 68 लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया है।

इसके अलावा, रिजर्व बैंक ने डिविडेंड के घोषणा से संबंधित नियमों के उल्लंघन के लिए केएलएम एक्सिवा फिनवेस्ट पर 10 लाख रुपए का जुर्माना लगाया है।

गुरुवार (27 मार्च) को एचडीएफसी बैंक का शेयर 1 प्रतिशत ऊपर 1825 के स्तर पर कारोबार कर रहा है। बैंक का शेयर एक महीने में 7.38 प्रतिशत, 6 महीने में 4.20 प्रतिशत और एक साल में 27 प्रतिशत चढ़ा है। इसका मार्केट कैप 13.97 लाख करोड़ रुपए है।

पंजाब एंड सिंध बैंक के शेयर में आज मामूली गिरावट है, यह 44 रुपए पर कारोबार कर रहा है। बीते एक महीने में बैंक का शेयर 5.80 प्रतिशत चढ़ा है, जबकि बीते 6 महीने और एक साल में 20.45 प्रतिशत और 21 प्रतिशत गिरा है। पीएसबी का मार्केट कैप 30 हजार करोड़ रुपए है।

ई-कॉमर्स की मदद से सशक्त हो रहे छोटे कारोबारी रोजगार के साथ आर्थिक विकास को भी मिल रहा बढ़ावा

नई दिल्ली। टेक्नोलॉजी आज केवल प्रोग्रामिंग और कंप्यूटिंग भाषाओं तक ही सीमित नहीं है। इससे परे टेक्नोलॉजी लोगों की समस्याओं को हल करने और जीवन को आसान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण ई-कॉमर्स इंडस्ट्री है, जिसका प्रभाव न केवल व्यवसायों पर बल्कि भारत के लाखों लोगों के जीवन पर भी देखा जा सकता है।

टेक्नोलॉजी, छोटे व्यापारियों की कैसे मदद कर रही है, आइए इसे लखनऊ की यास्मीन अदिल की प्रेरणादायक कहानी से समझते हैं। अदिल फिल्पकार्ट समर्थ की एक सफल विक्रेता हैं। आपको बता दें कि फिल्पकार्ट समर्थ अब एक राष्ट्रीय पहल है जो सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम, कारीगरों, बुनकरों और वंचित समुदायों को ई-कॉमर्स के माध्यम से नए अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से

शुरू की गई है। यह एक समावेशी डिजिटल प्लेटफॉर्म है जो उन्हें अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने और बेहतर जीवन यापन के काबिल बनाता है।

परिवार से दूर होने के कारण, यास्मीन अपना खुद का कुछ करना चाह रही थीं। पहले यह सिर्फ एक रचनात्मक शुरुआत थी, लेकिन जब उनके पति को एक जानलेवा बीमारी हो गई और वे दुबई से भारत लौट आए तो यास्मीन का व्यवसाय हीं उनके परिवार की आय का एकमात्र स्रोत बन गया। यास्मीन उन हजारों उद्यमियों और किसानों में से एक हैं जिन्हें भारत के घरेलू ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म ने अपने डिजिटल मार्केटप्लेस के माध्यम से वैश्विक बाजार से जुड़ने में मदद की है।

यास्मीन थोक विक्रेताओं से कपड़ा खरीदती हैं और इसे उन महिलाओं को देती हैं जो घर पर ही कढ़ाई का काम करती हैं। फिल्पकार्ट के सहयोग और समर्थ कार्यक्रम के लाभों के कारण उन्हें सही सहायता, प्रशिक्षण और बाजार संबंधी जानकारी मिली, जिससे उन्होंने अपने व्यवसाय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

यास्मीन कहती हैं, यह सिर्फ बिक्री का मामला नहीं है, बल्कि यह सीखने का अवसर है कि एक व्यवसाय को लंबे समय तक कैसे बढ़ाया और बनाए रखा जाए।

फिल्पकार्ट द्वारा पेश की गई सुविधाएं जैसे कैश ऑन डिलीवरी, नो-कॉस्ट ईएमआई, आसान रिटर्न और यूपीआई भुगतान जैसी सेवाओं ने छोटे विक्रेताओं को एक बड़ी ग्राहक पहुंच दिलाई है। आपको बता दें कि आज फ्लिपकार्ट के प्लेटफॉर्म पर 14 लाख से अधिक विक्रेता हैं और यह 50 करोड़ से अधिक ग्राहकों को सेवाएं प्रदान करता है, जो इसके ग्राहक-केंद्रित इनोवेशन का परिणाम है।

....

अनूपपुर जिले में ग्रीष्मकाल में पर्याप्त पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करें: राज्यमंत्री दिलीप जायसवाल

- जिले के सभी नागरिकों को पेयजल मुहैया कराएं अधिकारी

- राज्यमंत्री ने की लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के कार्यों की समीक्षा

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। मध्यप्रदेश शासन के कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिलीप जायसवाल ने कहा है कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत जिले में हो रहे कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में पूरा कर आमजन को ग्रीष्मकाल में पर्याप्त पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की जाए। जिन योजनाओं में कार्य लगभग पूर्ण हो गया है, उनसे आमजन को लाभान्वित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सुधार योग्य हैण्डपंप का मरम्मत कार्य प्राथमिकता पर करायें। ग्रीष्म ऋतु में सुचारू पेयजल उपलब्धता के लिए आवश्यक व्यवस्थाएँ समय से पूर्ण करें। ग्रीष्म ऋतु में जिले के सभी लोगों को पेयजल की सुविधा मुहैया होनी चाहिए। राज्यमंत्री दिलीप जायसवाल आज कलेक्ट्रेट कार्यालय के नर्मदा सभागार में लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग के विभागीय कार्यों की समीक्षा कर रहे थे।

राज्यमंत्री ने जिले के पेयजल समस्या से ग्रसित बसाहटो एवं मजरें टोलों के संबंध में अधिकारियों से जानकारी प्राप्त की। जिस पर अधिकारियों द्वारा बताया गया कि जिले के 31 बसाहटो को चिन्हित किया गया है, जो पेयजल समस्या से ग्रसित है, जिनमें पुष्पराजगढ़ के 22, अनूपपुर के 2, कोतमा के 2 तथा जैतहरी के 5

बसाहट शामिल है। जिस पर राज्यमंत्री ने चिन्हित बसाहटो में समुचित पेयजल मुहैया कराने के निर्देश अधिकारियों को दिए। बैठक में राज्यमंत्री ने कहा कि अधिकारी स्वयं ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण कर जल जीवन मिशन के कराए गए कार्यों के वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त कर सभी जगह पेयजल की बेहतर उपलब्धता सुनिश्चित करें।

बैठक में राज्यमंत्री ने अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए कि प्रशासन मैदानी अमला के सहयोग से जहां पेयजल की समस्या है, वहां हैंडपंप एवं ट्यूबवेल के माध्यम से पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित करें। इसी प्रकार ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र में अगर हैंडपंप खराब है उनका भी सुधार जल्द से जल्द किया जाए, जिससे लोगों को पेयजल मुहैया हो सके। उन्होंने जल संरक्षण एवं संवर्धन पर भी विशेष जोर देते हुए पेयजल हेतु भूमिगत जल स्तर को बेहतर बनाने के प्रयास करने के अधिकारियों को निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लोगों को भूमिगत जल स्तर को कैसे बढ़ाएं इस हेतु जागरूक किया जाए।

''जल गंगा संवर्धन'' अभियान को बनाएं जन आंदोलन

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)दिलीप जायसवाल ने कहा कि अनूपपुर जिले में 30 मार्च से 30 जून तक जल के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु ''जल गंगा संवर्धन'' अभियान चलाया जाएगा। जल के संरक्षण व संवर्धन के विशेष अभियान ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' में आमजन, जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं के सहभागिता से जल संरक्षण एवं संवर्धन के इस अभियान में बढ़-चढ़कर सहभागिता करने का आव्हान किया। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण, पौधरोपण, पुराने नदी, तालाब एवं बावड़ी जैसे जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार तथा संरक्षण के लिए सरकार व समाज, दोनों ही स्तर पर कार्य होना चाहिए। मध्यप्रदेश शासन के कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दिलीप जायसवाल आज कलेक्ट्रेट कार्यालय के नर्मदा सभागार में जल गंगा संवर्धन अभियान के पूर्व तैयारियों एवं कार्य योजना की समीक्षा कर रहे थे।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत तन्मय वशिष्ठ शर्मा, अपर कलेक्टर दिलीप पाण्डेय, जनपद अध्यक्ष जैतहरी श्री राजीव सिंह, जनपद अध्यक्ष कोतमा जीवन सिंह, नगरपालिका अध्यक्ष पसान रामअवध सिंह, नगरपालिका अध्यक्ष कोतमा अजय सराफ,नगरपालिका अध्यक्ष बिजुरी शहबिन पनिका, नगरपालिका अध्यक्ष अनूपपुर अंजुलिका सिंह, नगर परिषद अध्यक्ष डूमरकछार सुनील चौरसिया, नगर परिषद अध्यक्ष जैतहरी उमंग गुप्ता, नगर परिषद अमरकंटक की अध्यक्ष पार्वती सिंह, नगर परिषद डोला के उपाध्यक्ष रविशंकर तिवारी सहित संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

अनूपपुर तहसील के नवीन भवन का यथा स्थान पर ही होगा निर्माण: कलेक्टर

(ब्यूरो राजेश शिवहरे)

अनूपपुर। जिला मुख्यालय स्थित तहसील कार्यालय अनूपपुर के नवीन भवन निर्माण के लिए स्थान परिवर्तन संबंधी कार्यवाही को रोका गया है जनता की मांग अनुसार तहसील कार्यालय के नवीन भवन का निर्माण कार्य पूर्व स्थान पर ही कराया जाएगा उक्ताशय की जानकारी देते हुए कलेक्टर हर्षल पंचोली ने बताया है की तहसील कार्यालय अनूपपुर (जैतहरी रोड) प्रांगण में उपलब्ध भूमि में ही नवीन कार्यालय भवन का निर्माण कराए जाने का निर्णय जिला प्रशासन द्वारा लिया गया है।

आपको बताते चलें

नवीन तहसील भवन का निर्माण जिला पंचायत के सामने किया जाना था, जिसका स्थल चयन किया जा चुका था, निर्माण की पूरी प्रक्रिया की जा चुकी है। जिसको लेकर भारी विरोध शुरू हो गया था, इस संबंध में अनेकों प्रतिनिधि मंडल कलेक्टर हर्षल पंचोली से मिलकर मांग की अभी जहां पर तहसील संचालित है उसके पीछे अतिरिक्त भूमि खाली है वहीं पर तहसील के नवीन भवन का निर्माण किया जाए। अनूपपुर के विधायक एवं पूर्व मंत्री बिसाहू लाल सिंह से आज स्थानीय नवयुवक एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने मिलकर यह मांग की वर्तमान में जहां तहसील संचालित है, उसके पीछे ही नवीन तहसील भवन का निर्माण किया जाए जिस पर श्री सिंह ने तत्काल संज्ञान लेते हुए कलेक्टर अनूपपुर हर्षल पंचोली को पत्र लिखकर यह मांग की तहसील कार्यालय के नवीन भवन का निर्माण वर्तमान में संचालित तहसील भवन के पीछे किया जाए ।जिसके फल स्वरुप कलेक्टर श्री पंचोली ने सभी के मांगों को ध्यान में रखते हुए जनहित में यह निर्णय लिया है। इस निर्णय के उपरांत नवीन तहसील भवन के विरोध करने वालों ने खुशी का इजहार करते हुए फटाका फोड़ कर खुशी का इजहार किया है साथ ही जिला प्रशासन एवं सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया है।

पुष्पराजगढ़ के ग्राम सालरगोदी मामले में यथा समय जिला प्रशासन ने की कार्यवाही

अनूपपुर। जिले के पुष्पराजगढ़ जनपद पंचायत अंतर्गत ग्राम पंचायत सालरगोदी के ग्राम सभा में विधि विरुद्ध पारित प्रस्ताव मामले में सोशल मीडिया में प्रसारित खबर पर जिला प्रशासन ने संज्ञान लेते हुए यथा समय ही कार्यवाही की थी इस संबंध में बताया गया है कि ग्राम पंचायत सालरगोदी के सरपंच, उप सरपंच एवं समस्त पंचों को मध्य प्रदेश पंचायत राज एवं ग्राम स्वराज अधिनियम 1993 की धारा 40 के तहत नोटिस दिया गया प्रकरण की 16 एवं 26 नवंबर 2024 को सुनवाई कर सरपंच उप सरपंच, पंच, सचिव एवं ग्राम रोजगार सहायक द्वारा प्रस्तुत कथन जवाब व दस्तावेजों का अवलोकन, परीक्षण उपरांत अधिनियम की धारा 40 के तहत 26 दिसंबर 2024 को आदेश पारित करते हुए दोषी पाए उप सरपंच सोनिया बाई एवं वार्ड नंबर 2 की पंच नरबदिया बाई को पद से हटाया जाकर शेष ग्राम पंचायत पदाधिकारी को भविष्य में इस तरह की पुनरावृत्ति न होने की चेतावनी दी गई इस प्रकरण पर सुनवाई में सरपंच द्वारा प्रस्तुत दस्तावेज के अनुसार पारित प्रस्ताव को निरस्त करने की कार्यवाही भी की गई है इस मामले में पदीय दायित्वो के प्रति लापरवाही बरते जाने के कारण ग्राम पंचायत सालारगोंदी की सचिव जयंती पनाडिया को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है इस तरह प्रशासन द्वारा दोषीयो के विरुद्ध कार्यवाही संस्थित की गई है।

योग गुरु राजेश बैरागी को राष्ट्रीय प्रभारी नियुक्त होने पर योग साधकों ने किया स्वागत

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। योग गुरु राजेश बैरागी को नरेन्द्र मोदी विचार मंच, भारत के प्रकोष्ठ अंतरराष्ट्रीय संत बौद्धिक मंच के राष्ट्रीय प्रभारी नियुक्त करने पर योग साधकों द्वारा स्वागत किया गया। उपरोक्त जानकारी देते हुए वरिष्ठ योग साधक कमलसिंह तंवर ने बताया कि नरेन्द्र मोदी विचार मंच, भारत के प्रकोष्ठ अंतरराष्ट्रीय संत बौद्धिक मंच का अंतरराष्ट्रीय संत समागम गत 21 मार्च को नेपाल के पोखरा में सम्पन्न हुआ। जिसमें दिव्य योग संस्थान के संस्थापक प्रसिद्ध योग गुरु राजेश बैरागी को अंतरराष्ट्रीय संत बौद्धिक मंच के योग का राष्ट्रीय प्रभारी नियुक्त करने पर श्रीमंत तुकोजीराव पवार स्टेडियम में योग साधकों द्वारा श्री बैरागी का शॉल-श्रीफल व पुष्पमाला

पहनाकर एवं मुंह मिठा कराकर ढोल धमाके के साथ स्वागत किया गया। स्वागत समारोह का संचालन योग साधक कमलसिंह तंवर ने किया। इस अवसर पर दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण मारु ने नरेन्द्र मोदी विचार मंच एवं प्रकोष्ठ अंतरराष्ट्रीय संत बौद्धिक मंच के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए योग गुरु श्री बैरागी को राष्ट्रीय प्रभारी नियुक्त करने पर बधाई एवं शुभकामना दीं। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार एवं प्रेस क्लब देवास के पूर्व अध्यक्ष अनिल राज सिंह सिकरवार ने संबोधित करते हुए योग की महत्ता बताते हुए योग गुरु बैरागी की योग के प्रति योगदान की सराहना करते हुए राष्ट्रीय प्रभारी नियुक्त होने पर बधाई एवं शुभकामना दीं। इस अवसर पर योग गुरु श्री बैरागी ने वरिष्ठ योग साधक देवीसिंह बैस एवं राममिलन चौधरी का उनका योग के लिए समर्पण के लिए पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर सभी योग साधकों द्वारा ढोल धमाके के साथ जुलूस के रुप में बस स्टैंड स्थित गुरुद्वारा पर ले गए। स्वागत समारोह में भारी संख्या में महिला एवं पुरुष योग साधक उपस्थित रहे। स्वागत समारोह को सफल बनाने में वरिष्ठ योग साधक हिम्मत सिंह दरबार, अनूप सिंह जादौन, मांगीलाल ठाकुर, मोड़ सिंह धाकड़, नवनीत गुप्ता, राधेश्याम पाटीदार, सुरेश लाखा आदि का सराहनीय योगदान रहा।

हाथी का कहर जारी है

रात भर घूमने बाद गोबरी के जंगल में ठहरा हाथी, एक मकान के साथ किसानों की फसलों को बनाया आहार

अनूपपुर। एक हाथी विगत 8 दिनों से अनूपपुर जिले में प्रवेश कर अनूपपुर तथा जैतहरी तहसील,थाना एवं वन परिक्षेत्र के विभिन्न ग्रामीण अंचलों से लगे जंगलो में दिन में विश्राम करने बाद देर रात होते ही ग्रामीणो के घरों,खेत,बांड़ी में आहार की तलाश करते हुए तोड़फोड़ कर नुकसान कर रहा है विगत रात पगना,ठेगरहा में विचरण करने के बाद गुरुवार की सुबह गोबरी के जंगल में यह हाथी पहुंचकर विश्राम कर रहा है। बुधवार की सुबह एक दांत वाला यह नर हाथी वन परिक्षेत्र जैतहरी के गोबरी बीट के जंगल के साथ वन परिक्षेत्र अनूपपुर के दुधमनिया बीट के पगना गांव से लगे जंगल शक्तिकुंडी के पास पूरे दिन जगह बदल-बदल कर विचरण कर रहा था देर शाम वन विभाग के श्रमिकों द्वारा काम करने के दौरान इस हाथी को विचरण करते देखा इसके बाद से निरंतर देर रात तक खोजबीन के बाद भी हाथी के विचरण की जानकारी नहीं मिली तभी अचानक ग्राम पंचायत पगना के ग्राम पगना के बरटोला में संजय सिंह के घर के पास खेत में लगी गेहूं की फसल को घंटो तक खाते हुए यह पगना,ठेगरह,गोबरी मुख्य मार्ग पर चलता हुआ गुरुवार की सुबह ग्राम पंचायत गोबरी के ठेंगहहा गांव में कुन्ना कोल के घर के पास से होकर पंचम सिंह के घर में अचानक हमला बोलते हुए तोड़फोड़ कर घर के अंदर रखी सामग्री को खाते हुए बर्तन इत्यादि को भी नुकसान पहुंचा कर गोबरी के जंगल में विश्राम करने पहुंच गया,देर रात तक अनूपपुर एवं जैतहरी वन परीक्षेत्र के गश्ती दल में लगे अधिकारी/कर्मचारी हाथी के विचरण पर नजर रखते हुए ग्रामीणों को सचेत एवं सतर्क करते रहे हैं।

समर्पण निधि, स्थापना दिवस, वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर हुई भाजपा की बैठक

-भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने पदाधिकारियों को किया संबोधित

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

देवास। गुरुवार को समर्पण निधि, स्थापना दिवस, वन नेशन वन इलेक्शन को लेकर भाजपा की बैठक स्थानीय भाजपा कार्यालय पर आयोजित की गई। सर्वप्रथम भाजपा जिलाध्यक्ष रायसिंह सेंधव ने हितानंद शर्मा सहित अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि एक करोड़ रुपए समर्पण निधि का लक्ष्य था, जो पूर्ण करते हुए करीब 80 लाख रुपए पूर्ण हो चुके हैं। जो अपना लक्ष्य पूरा कर चुके हैं उन्हें बधाई तथा जो अभी पीछे रह गए हैं, वे अपना लक्ष्य शीघ्र पूर्ण कर समर्पण निधि कार्यालय में जमा कराएं। साथ ही वन नेशन वन इलेक्शन, स्थापना दिवस, मन की बात कार्यक्रम के संदर्भ में भी उपस्थितजनों को विस्तृत जानकारी दी। उक्त जानकारी देते हुए भाजपा सह जिला मीडिया प्रभारी कमल अहिरवार ने बताया कि कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भाजपा उज्जैन संभाग प्रभारी जीतू जिराती ने स्मरण

सुनाते हुए कहा कि जब हम मण्डल अध्यक्ष थे, तब पार्टी की 10-10 रुपए की रसीद काटकर हजार रुपए इकट्ठा करने में हम लोगों को पसीना आ जाता था। आज की भाजपा के आप मंडल अध्यक्ष 4-4 लाख रुपए का लक्ष्य पूरा कर रहे हैं। इसके पीछे वजह यह है कि सभी प्रमुख पदों पर भाजपा के कार्यकर्ता विराजमान हैं। पंच से लेकर पालिर्यामेंट तक हमारी पार्टी के लोग बैठे हैं। वहीं भाजपा प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा ने कहा कि मंडल अध्यक्ष अपने मंडल का शीघ्र गठन करें। आगामी दिनों में मंडलों का गठन किया जाना है। उसमें सभी वर्गों का ध्यान रखा जाए, जिसमें एससी, एसटी, महिला कार्यकर्ता, पिछ?ा वर्ग एवं सामान्य वर्ग के कार्यकर्ताओं को दायित्व उनकी ऊर्जा अनुसार मिले, इसका भी ध्यान मंडल अध्यक्ष रखें। एक करोड़ रुपए के समर्पण निधि के लक्ष्य की भी पूर्ति होने वाली है, इसके लिए आप सभी ऊर्जावान कार्यकर्ता, मंडल अध्यक्ष व जिम्मेदार पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। श्री शर्मा ने कहा कि आगामी कार्यक्रम गुड़ी पड़वा, अंबेडकर जयंती, मन की बात कार्यक्रम तथा संगठनात्मक कार्य को सभी जिला स्तर, मंडल तथा बूथ स्तर पर आयोजित करें। हितानंद ने पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित हो रहे कार्यक्रमों में पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं को बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की बात कही। इस अवसर पर भाजपा संभाग प्रभारी जीतू जिराती, भाजपा जिलाध्यक्ष रायसिंह सेंधव, विधायक गायत्री राजे पवार, विधायक मुरली भंवरा, जिपं अध्यक्ष लीला भेरूलाल अटारिया, महापौर गीता दुर्गेश अग्रवाल, पूर्व देविप्रा अध्यक्ष राजेश यादव, नंदकिशोर पाटीदार, बहादुर मुकाती, महेश दुबे, सुरेश आर्य, सभापति रवि जैन, मनीष सोलंकी सहित भाजपा पदाधिकारी व मंडल अध्यक्ष उपस्थित थे।

'पुष्पा 2' से प्रेरित काली माँ के अवतार में दिखे शील वर्मा, 'बड़ी हवेली की छोटी ठकुराईन' में आएगा जबरदस्त मोड़

मुंबई। कुछ किरदार ऐसे होते हैं, जो किसी भी अभिनेता की प्रतिभा को नई चुनौती देते हैं और शेमारू उमंग के लोकप्रिय शो ''बड़ी हवेली की छोटी ठकुराईन'' ने शील वर्मा को ऐसा ही एक बेहतरीन मौका दिया। इस शो की कहानी के एक रोमांचक मोड़ पर जयवीर (शील वर्मा द्वारा अभिनीत किरदार) का किरदार एक दमदार परिवर्तन से गुजरने वाला है, जहाँ वे 'पुष्पा 2' फिल्म में अल्लू अर्जुन के काली माँ अवतार से प्रेरित हुए दिव्य रूप में नज़र आएँगे। इस ट्रैक में जयवीर चैना को अपहरणकर्ताओं से बचाने के लिए काली माँ के शक्तिशाली रूप में दिखाई देंगे।

शील वर्मा ने अपने इस अनोखे अनुभव को साझा करते हुए कहा, 'जब मुझे पता चला कि मै 'पुष्पा 2' फिल्म से प्रेरित यह अवतार धारण करने वाला हूँ, तो मैं इसे निभाने को लेकर बेहद उत्साहित हो गया। मेरा नया किरदार देवी काली की शक्ति को आत्मसात कर हर बाधा को पार करता है, जो वाकई बहुत प्रभावशाली है। जब मैंने आईने में खुद को पहली बार इस दिव्य रूप में देखा, तो मेरे रोंगटे खड़े हो गए। यह अनुभव मेरे लिए अद्भुत था। इस किरदार के चलते सेट पर फैली ऊर्जा और इस किरदार की गहराई ने मुझे और अधिक शक्तिशाली और कहानी से जुड़ा हुआ महसूस कराया। सीन में तांडव की तैयारी मेरे लिए शारीरिक और मानसिक रूप से काफी चुनौतीपूर्ण थी, लेकिन यह सब मेरे करियर के सबसे बेहतरीन पलों में से एक था। मुझे उम्मीद है कि दर्शक भी मेरे प्रदर्शन में वही जुनून और तीव्रता महसूस करेंगे, जो मैंने इसे शूट करते समय की।'

जयवीर के इस पहले कभी न देखे गए अवतार के साथ, 'बड़ी हवेली की छोटी ठकुराईन'' शो दर्शकों को रोमांच से भर देने का वादा करता है। इस शक्तिशाली पल का साक्षी बनने के लिए यह शो देखें हर सोमवार से शनिवार, रात 9 बजे, सिर्फ शेमारू उमंग पर।

सेलिब्रिटीज़ ने साईं बाबा के भक्तों के लिए तैयार किया भोजन

मुंबई। सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न का सेलिब्रिटी मास्टरशेफ़ एक भावनात्मक और आध्यात्मिक एपिसोड प्रस्तुत करने के लिए तैयार है, जहां सेलिब्रिटी मास्टरशेफ़ के आगामी एपिसोड में भावनाएं अपने चरम पर होंगी। इस एपिसोड की शुरुआत एक भावुक पल से होगी, जब तेजस्वी प्रकाश और राजीव अदातिया साईं बाबा के प्रति अपनी गहरी भक्ति व्यक्त करेंगे, और फिर शिर्डी जाकर श्री साईं बाबा मंदिर में दर्शन करेंगे। सेट पर लौटने के बाद, तेजस्वी सभी जजों और प्रतियोगियों को प्रसाद देंगी, जिसके बाद सेट पर साईं बाबा की पूजा की जाएगी। इसके बाद खुलासा होगा कि इस बार के चैलेंज में सभी प्रतियोगियों को साईं बाबा के 500 से अधिक भक्तों के लिए भोजन तैयार करना होगा।

साईं बाबा के भक्त राजीव ने उनसे अपने जुड़ाव को किया साझा करते हुए

इस खास एपिसोड के बारे में बताएँगे। वे बताएँगे, 'मेरे माता-पिता हमेशा कहते थे, अगर तुम सच्चे भक्त हो, तो जो कुछ भी तुम दिल से मांगोगे, वह ज़रूर मिलेगा। मैं पिछले 20 सालों से साईं बाबा का भक्त हूं। किचन में साईं बाबा का आशीर्वाद लाने की बात से ही मुझे एक उद्देश्य और शक्ति का एहसास होने लगा है। इस एपिसोड में अब तक का सबसे बड़ा टास्क मिला है,प्रतियोगियों को हज़ारों लोगों के लिए भोजन तैयार करना होगा!' इस हाई-स्टेक्स कुकिंग चैलेंज में प्रतियोगियों को दो टीमों में बांटा गया, जहां राजीव और तेजस्वी कप्तान की भूमिका में होंगे और अपनी नेतृत्वक्षमता और भावनाओं को सामने लाएँगे। तेजस्वी कहेंगी, 'आस्था से मुझे शक्ति मिलती है। साईं बाबा मेरे लिए मार्गदर्शक रहे हैं, और मैं सच में मानती हूं कि प्रेम और प्रार्थना के साथ पकाया गया भोजन ही सबसे खास होता है।' शिर्डी जाना और साईं बाबा का आशीर्वाद लेना इस जोड़ी के लिए अनोखा अनुभव रहा, जिसके साथ वे अपनी टीम को जीत दिलाने के लिए और अधिक दृढ़ संकल्पित हो गए हैं।

क्या उनकी भक्ति, नेतृत्व और रसोई के कौशल उन्हें इस बड़ी चुनौती में सफल होने में मदद करेंगे? देखिए सेलिब्रिटी मास्टरशेफ़, सोमवार से शुक्रवार रात 8 बजे, केवल सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविज़न और सोनी लिव पर!

अदाणी फाउंडेशन द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालय में सोलर पैनल का शुभारंभ

अदाणी फाउंडेशन द्वारा बारां जिले के 15 विद्यालयों में सूर्य की ऊर्जा से संवरता भारत कार्यक्रम के अंतर्गत सोलर पैनल संयंत्र स्थापित किया गया है। ऐसे में, अब इस सोलर पैनल से जवाहर नवोदय विद्यालय की दैनिक गतिविधियों एवं विद्यार्थियों के अध्ययन में बिजली कटौती से होने वाली समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अदाणी फाउंडेशन द्वारा स्थापित सोलर पैनल का शुभारंभ अदाणी पॉवर प्लांट एचआर हेड श्री दीपक शर्मा, सीएसआर हेड गोपाल सिंह देवड़ा एवं जवाहर नवोदय विद्यालय के उपायुक्त डॉ. अजय कुमार द्वारा किया गया।

अदाणी पॉवर प्लांट हेड प्रमोद सक्सेना ने बताया कि अदाणी फाउंडेशन द्वारा स्थापित सोलर पैनल संयंत्र से बारां जिले के आवासीय एवं नवोदय विद्यालय के 4500 से अधिक विद्यार्थियों को दैनिक गतिविधियों एवं अध्यापन कार्य में मदद मिलेगी।

डॉ. अजय कुमार, उपायुक्त, जवाहर नवोदय विद्यालय द्वारा पीएम जवाहर नवोदय विद्यालय अटरु में अदाणी फाउंडेशन द्वारा लगाए गए सोलर संयंत्र की सराहना करते हुए अदाणी

फाउंडेशन का धन्यवाद् ज्ञापित किया, साथ ही विद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ दी गईं। इस अवसर पर अदाणी पॉवर के एचआर हेड दीपक शर्मा ने बताया कि अदाणी फाउंडेशन की चेयरपर्सन डॉ. प्रीति जी अदाणी के नेतृत्व में अदाणी फाउंडेशन द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में सामाजिक सरोकार के कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विद्यालयों में सोलर पैनल की स्थापना से विद्यालय में बिजली खर्च की राशि बचेगी, जो कि विद्यालय विकास में काम आ सकेगी। साथ ही विद्यालय को 24 घंटे बिजली मिलती रहेगी।

अदाणी फाउंडेशन के सीएसआर हेड गोपाल सिंह देवड़ा ने बताया कि अदाणी फाउंडेशन द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका विकास एवं बुनियादी ढाँचे के विकास हेतु विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। इस वर्ष सौर ऊर्जा के माध्यम से जिले के विद्यालयों को रोशन करने का कार्यक्रम फाउंडेशन द्वारा संचालित किया गया है, जिससे जिले के आवासीय एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने एवं परिणाम श्रेष्ठ होने के बावजूद विद्यालय में विद्युत की कटौती को चलते बच्चों के अध्ययन कार्य में असर पड़ता था। इसे ध्यान में रखते हुए फाउंडेशन द्वारा विद्यालय में सोलर संयंत्र की स्थापना की गई है, जिससे आने वाले समय में बेहतर परिणाम देखने को मिलेगा, साथ ही साथ सूर्य ऊर्जा का विद्यार्थी एवं विद्यालय परिवार को लाभ मिलेगा।

इस अवसर पर जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचार्य श्री रामकेश बैरवा ने अदाणी फाउंडेशन द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालय को किए गए सहयोग हेतु धन्यवाद् ज्ञापित किया।

अदाणी फाउंडेशन के परियोजना अधिकारी मनीष नंदवाना ने बताया कि जिले के 15 विद्यालयों में सौर ऊर्जा संयंत्र की स्थापना की गई है। आज हमें बताते हुए खुशी हो रही है कि सभी विद्यालयों में स्थापित सौर ऊर्जा संयंत्र से आवश्यकतानुसार 24 घंटे विद्यालय परिवार को विद्युत की आपूर्ति होगी।

जौरा पुलिस ने पकड़े विद्युत तार चोर वाहन व आरोपी हिरासत में

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। स्थानीय पुलिस द्वारा चोरी करके ले जाया जा रहा लाखों का विद्युत तार तो पकड़ा ही है चोरी में शामिल एक हाइड्रा एवं एक कैंटर ट्रक भी जप्त किया है। फरियादी अनिल कुमार पुत्र जयराम यादव निवासी नादो थाना सौर बाजार जिला सहरसा बिहार द्वारा दर्ज कराई गई रिपोर्ट में लिखाया है कि जौरा में हमारी कंपनी रामचंद्रन राव ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा वर्तमान में 132 केवी रेलवे ट्रेक्शन लाइन का तार खींचने का कार्य कराया जा रहा है। वर्तमान में यह कार्य लगभग 90 प्रतिशत पूरा हो चुका है। हमारी कंपनी के नौ ड्रम तार जेल रोड पर स्थित दिनेश शर्मा के प्लॉट में रखे हुए हैं। दिनांक 26 मार्च 2025 की शाम 6:00 बजे के लगभग हमारे कर्मचारी शशिकांत का फोन आया कि अपने विद्युत तार को कैंटर क्रमांक आरजे 11 जीसी 1488 चालक अपने वाहन में तीन ड्रम हाइड्रा से लादकर चोरी कर ले जा रहे हैं। जब कंपनी के कर्मचारियों ने उन्हें रोकने की कोशिश की तो उन्होंने कैंटर ट्रक को रोका नहीं। तत्काल नगर निरीक्षक उदयभान यादव को सूचना दी गई जिस पर से श्री यादव ने उप निरीक्षक पंकज यादव एवं कन्हैया सिंह सिकरवार, प्रविंद्र सिंह तोमर, रामेंद्र सिंह परमार, विक्रम सिंह, प्रवीन शर्मा सहित अन्य पुलिस टीम को ले जाकर लाखों के तार को चोरी कर ले जा रहे कैंटर ट्रक का पीछा किया किया तो बिलगांव के पास एमएस रोड पर सीएम राइस स्कूल के पास उक्त कैंटर ट्रक चालक को पकड़कर ट्रक सहित थाने लाया गया, वहीं हाइड्रा को भी पुलिस ने बीच रास्ते में ही पकड़ कर थाने में ही रखवाया।

प्रकरण में नगर निरीक्षक उदयभान सिंह यादव का कहना है कि रेलवे लाइन पर रामचंद्रन राव ट्रांसमिशन प्रोजेक्ट प्राइवेट लिमिटेड कंपनी के ठेकेदार द्वारा तार खींचने का कार्य किया जा रहा था। उनका सामान जौरा में रखा हुआ था, जिसे एक हाइड्रा द्वारा कैंटर ट्रक में भरकर चोरी कर लिया जा रहा था। दोनों चालक भी गिरफ्तार कर लिए हैं। दोनों वाहन भी जप्त हैं। विद्युत तार की कीमत लगभग 12 लख रुपए है, जबकि जप्त किए गए हाइड्रा एवं कैंटर ट्रक की कीमत भी लगभग 70 लाख रुपए आकी गई है।

नाना के घर रह रही किशोरी ने लगाई फांसी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। पिता की मृत्यु के बाद अपनी माता के साथ नाना के घर रह रही एक युवती ने फांसी लगाकर अपने जीवन लीला समाप्त कर ली।

सहायक उप निरीक्षक मुकेश सिंह राजावत से मिली जानकारी के अनुसार रूनीपुर रोड पर स्थित बिजली घर के पास बलवंत रजक निवास करते हैं। उनके ही यहां उनकी बेटी एवं बेटी के बच्चे भी रहते हैं। उनके दामाद सोनेराम रजक की मृत्यु होने के बाद सोनेराम का परिवार बलवंत के यही रह रहा है। 27 मार्च को घर के सदस्यगण मजदूरी अन्य काम के लिए चले गए थे। घर में मौजूद रागिनी पुत्री सोनेराम उम्र 18 वर्ष में मकान के अंदर अपनी चुनरी से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर युवती के सबको पोस्टमार्टम हेतु अस्पताल पहुंचाया। पीएम की बात मृतक केशव को परिजनों को सौंप दिया है तथा प्रकरण में मर्ग कायम कर विवेचना की जा रही है।

कलेक्टर द्वारा शनि मंदिर पहुँचकर चल रही तैयारियों का किया गया अवलोकन

शनि मेले को ध्यान में रखते हुये आवश्यक इंतजाम हेतु अधिकारियों को दिये निर्देश

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। शनिश्चरी अमावस्या 29 मार्च, 2025 को है। जिसे ध्यान में रखते हुये कलेक्टर अंकित अस्थाना ने गुरूवार को शनि मंदिर पहुंचकर चल रही तैयारियों का अवलोकन किया। अवलोकन के दौरान उन्होंने शनि मंदिर परिसर का भ्रमण किया एवं तैयारियों के विषय में अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को असुविधा न हो,इसलिये उन्होंने पानी टेंकर, पार्किंग, लाइटिंग की पूर्ण व्यवस्था हो,इस संबंध में अधिकारियों को निर्देश देते हुये कहा कि आज सायं तक जो भी कार्य अपूर्ण है, उन्हें पूरा कर लिया जाये।

इसी के चलते कलेक्टर ने टेंट व्यवस्था, ग्वालियर मार्ग पर रोड़ को दुरूस्त कराने, बेरिकेटिंग, मंदिर परिसर में नाई व्यवस्था आदि सुनिश्चित कराने के निर्देश दिये। कलेक्टर ने सभी अधिकारियों को आपसी समन्वय स्थापित करके कार्य करने के निर्देश दिये एवं कहा कि मेले में श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुरेन्द्र पाल सिंह डाबर, एसडीएम मुरैना बीएस कुशवाह सहित अन्य अधिकारी एवं मंदिर प्रतिनिधि उपस्थित थे।

ट्रैक्टर रखने को लेकर दो पक्षों में झगड़ा, क्रॉस केस दर्ज

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। दुकान के आगे ट्रैक्टर रखना को लेकर दो पक्ष में हुई विवाद पर से पुलिस ने क्रॉस मामला कायम किया है। पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार फरियादी रामबरन शर्मा पुत्र चतुर्भुज शर्मा ने दर्ज कराई रिपोर्ट में लिखाया है कि 27 मार्च को दोपहर 12:00 बजे के लगभग उत्कृष्ट विद्यालय के सामने सलीम खान की आरा मशीन दुकान के पास मेरी मोटरसाइकिल रखी थी, तभी दिनेश कुशवाहा, विनोद कुशवाहा, हकीम कुशवाहा, सुमित कुशवाहा ट्रैक्टर लेकर आए और मोटरसाइकिल हटाने के ऊपर से गंदी-गंदी गालियां देने लगे। मैंने गाली देने की मना की तो उक्त लोगों ने मेरी लात-घूंसों से मारपीट कर दी, तब मुझे बचाने आए मेरे रिश्तेदार मंजेश त्यागी के सिर में पीछे से दिनेश कुशवाहा ने डंडा मार दिया, जिससे खून निकलकर मंजेश के चोट आई है एवं मेरे बाएं हाथ की कलाई गार्डन में भी चोट आई है।

पुलिस ने फरियादी रामबरन त्यागी शर्मा की रिपोर्ट पर से मारपीट करने वाले के विरुद्ध मामला काम किया है, वहीं दूसरे पक्ष की ओर से फरियादी दिनेश कुशवाहा ने दर्ज कराई रिपोर्ट में लिखा है कि गुरुवार को सलीम खान की आरा की दुकान के सामने अपने ट्रैक्टर को खड़ा कर रहे थे। वहां खड़ी मोटरसाइकिल को एक तरफ लगा रहे थे कि इतने में रामचरण त्यागी एवं मंजेश त्यागी आ गए तथा मोटरसाइकिल हटाने को लेकर गाली-गलौज मारपीट झगड़ा हो गया, जिससे सुमित के सिर में चोट आई है। हाकिम सिंह की पीठ में भी चोट आई है। पुलिस ने फरियादी की रिपोर्ट पर से मामला कायम किया है। मामले में नगर निरीक्षक उदयभान सिंह यादव का कहना है कि दुकान के आगे ट्रैक्टर रखना एवं मोटरसाइकिल हटाने के विवाद को लेकर दोनों पक्षों में झगड़ा हुआ है। दोनों पक्षों की रिपोर्ट पर क्रॉस मामला काम किया गया है।

नपाध्यक्ष जौरा श्री माहेश्वरी ने सांसद विवेक तन्खा, विधायक पंकज उपाध्याय आदि से की विशेष चर्चा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/जौरा। स्व.श्रीमती मोहन प्यारी देवी माहेश्वरी जी की स्मृति में रोटरी मेडिकल मिशन राहत -2 हैल्थ कैंप में राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा, जौरा विधायक पंकज उपाध्याय, जिला पंचायत मुरैना के मुख्य कार्यपालन अधिकारी आइ.ए.एस. कमलेश कुमार भार्गव से मुलाकात कर नगर पालिका जौरा के अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने जौरा क्षेत्र के विकास से जुड़े मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हुए उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि आप सभी की विशेष पहल पर जौरा अंचल के समग्र विकास की धारा को और भी अधिक गतिशील बनाया जा सकता है। श्री माहेश्वरी ने जौरा के क्षेत्र के हित में सभी से अंचल के ज्वलंत मुद्दों का हल निकालने का भी अनुरोध करते हुए कहा कि अंचल के विकास को अमलीजामा पहनाने हेतु आप सभी माननीयों के सहयोग से यह अंचल विकास के नये आयाम स्थापित कर सकता है। नपाध्यक्ष श्री माहेश्वरी के विनम्र अनुरोध को सभी माननीयों ने सहर्ष स्वीकार करते हुए उन्हें विश्वास दिलाया कि अंचल के विकास हेतु आप की हर पहल का पुरजोर समर्थन करते हुए हरसंभव सहयोग प्रदान किया जाएगा। श्री माहेश्वरी के साथ उद्योगपति अशोक सिंह भदौरिया एवं अनुज सिंह सिकरवार एडवोकेट, दिनेश सिंह भी मौजूद रहे।

महान बनने के लिए तीन गुण आवश्यक- सच्चाई, सफाई, सादगी

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सेवा केंद्र सुख शांति भवन सब्जी मंडी रोड पोरसा एवं मुरैना मुड़िया खेड़ा में संस्था की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी का पांचवा पुण्य स्मृति दिवस वैश्विक आध्यात्मिक जागृति दिवस के रूप में मनाया।

केंद्र की प्रभारी ब्रह्माकुमारी कृष्णा दीदी जी ने सभी को दादी जानकी जी की विशेषताओं के बारे में बताया। दादी जी का जन्म 1916 में हैदराबाद सिंध प्रांत में हुआ। वे 21 वर्ष की आयु में संस्थान से जुड़ीं। 1970 में वे पहली बार विदेश सेवा पर निकलीं। 2007 में ब्रह्माकुमारीज की मुख्य प्रशासिका बनीं। उन्होंने 46 हजार बहनों की अलौकिक मां बनकर पालना की। 103 साल की उम्र में भी 12 घंटे विश्व की सेवा में सक्रिय रहीं। वर्ष 1978 में, टेक्सस विश्वविद्यालय, यू. एस. ए., के मेडिकल एंड साइंस रिसर्च इंस्टिट्यूट ने दादी जानकी को दुनिया की सबसे स्थिर बुद्धि वाला मनुष्य घोषित किया। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में कहा कि जटिल बुद्धि परिक्षण करते हुए भी उनकी बुद्धि पूर्ण रूप से स्थिर थी। विश्व की सबसे स्थिर मन वाली महिला का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी दादी जी के नाम है। ब्रह्माकुमारी की पूरे विश्व में साफ-सफाई और स्वच्छता को लेकर विशेष पहचान रही है। देश में स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने दादी जानकी को स्वच्छ भारत मिशन का ब्रांड एंबेसेडर भी नियुक्त किया था। कार्यक्रम में सैकड़ों भाई-बहनों ने दादी जी को श्रद्धासुमन अर्पित किए, जिसमें मुख्य रूप से ब्रह्माकुमारी निकेता, प्रियंका, गंगा, सुमन, उमा, गीता, उर्मिला, चंद्रकला, कमला, आरती, शीलू, अनीता, नीलम, सीमा, राधे, रजनी, बसंती, ब्रह्माकुमार नितेश, विवेक, शुभम, रामप्रकाश, गोकर्ण, उदय, रामावतार, अलख, रघुवर, रामजीलाल, ग्याराम भाई उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री करण सिंह वर्मा आज आयेंगे

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। प्रदेश सरकार के राजस्व मंत्री एवं मुरैना जिले के प्रभारी मंत्री करण सिंह वर्मा दो दिवसीय प्रवास पर 28 मार्च को मुरैना आयेंगे।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रभारी मंत्री श्री वर्मा 28 मार्च को सायं 05:20 बजे भोपाल से ट्रेन द्वारा प्रस्थान कर रात्रि 11:25 बजे मुरैना आयेंगे और विश्राम करेंगे। मंत्री श्री वर्मा 29 मार्च को प्रातः 11:30 बजे एसएएफग्राउंड मुरैना में चल रहे स्वास्थ्य शिविर में भाग लेंगे। प्रभारी मंत्री सायं 4:40 बजे मुरैना से ट्रेन द्वारा भोपाल के लिये प्रस्थान करेंगे।

बालक-बालिका छात्रावास का नवीन शिक्षण सत्र अप्रैल से होगा प्रारंभ

मुरैना। शासकीय उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय क्र.1 मुरैना में नवीन निर्मित 100-100 सीटर बालक एवं बालिका छात्रावासों को नवीन शिक्षण सत्र अप्रैल 2025 में प्रारंभ किया जा रहा है। इन छात्रावासों में छात्र-छात्राओं हेतु भोजन व्यवस्था एवं साफ-सफाई हेतु मुख्य रसोइया, सहायक रसोइया, सहायिका एवं चौकीदार की व्यवस्था पूर्णतः अस्थाई रूप से मानदेय आधारित की जाएगी। उक्त कार्य करने के इच्छुक व्यक्ति पुरुष एवं महिलायें शासकीय उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय क्र.1 के एसएमडीसी शाखा में अपने आवेदन 31 मार्च 2025 तक कर सकते हैं। विद्यालय के छात्रावास शासकीय उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय क्र.1 मुरैना में नियमित अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं हेतु हैं एवं पूर्णतः निःशुल्क रहेंगे।

माता सती ने भगवान शंकर जी की बात नहीं मानी और अपने पिता के यहां गई तो उन्हें अपने प्राण त्यागने पड़ेः पं. अमित मिश्रा

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना/पोरसा। दक्ष प्रजापति ने एक यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें उन्होंने अपनी पुत्री सती को नहीं बुलाया था। माता सती ने अपने पिता के प्रेम के बदौलत यज्ञ में जाना उचित समझा। शंकर जी के लाख मना करने के बावजूद भी माता सती नहीं मानीं। जब वे अपने पिता के यहां यज्ञ में गईं तो वहां पर उनका अपमान हुआ तथा भगवान शंकर का भी अपमान हुआ, तब माता सती ने हवन कुंड में कूदकर अपने प्राण त्याग दिए, जिसकी खबर जब शंकर जी को मालूम पड़ी तो उनके गणों ने यज्ञ को विध्वंस कर दिया। उक्त उद्गार श्री राधाकृष्ण मंदिर पोरसा पर चल रही संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा में कथावाचक पं. अमित मिश्रा शास्त्री थरा वालों ने व्यक्त किए। पं. शास्त्री ने सती माता के बारे में विस्तार से समझाया। पं. शास्त्री ने कहा कि नरक योनियों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि हर व्यक्ति को वृक्षारोपण करके प्रदूषण रोकना चाहिए। वृक्षारोपण बहुत उपयोगी होता है। एक वृक्ष सौ पुत्रों के समान कहलाता करता है। मतलब एक बृक्ष सौ व्यक्तियों को ज़िंदा रखने के लिए ऑक्सीजन देता है, इसलिए सभी को वृक्षारोपण करना चाहिए, जो शास्त्रों में भी लिखा है। वृक्षों से हमें फल व फूल प्रधान करते हैं, जो हमारी बीमारियों में काम आते हैं। कथा की व्यवस्थायें पूरन सिंह तोमर, मुकेश गुप्ता, पवन सिंघल, पंकज गुप्ता, नत्थीलाल अग्रवाल, रामकुमार गुप्ता आदि ने देखीं।

(शनि अमावस्या पर विशेष)

शनिश्चरी अमावस्या पर मुरैना में होता है, विशेष मेले का आयोजन

मुरैना। मुरैना जिले में शनि अमावस्या पर ऐंती पहाड़ी स्थित शनि मंदिर परिसर में मेले का आयोजन होता है। जिसमें दूर-दराज से श्रद्धालु शनिदेव के दर्शन करने यहां आते है। इस बार भी 29 मार्च को शनिश्चरी अमावस्या पर इस मेले का आयोजन होना है।

किंवदंतियां

शनि मंदिर देश का सबसे प्राचीन त्रेतायुगीन मंदिर है। साथ ही यहां स्थापित श्री शनिदेव की प्रतिमा भी विशेष एवं अद्भुत है। ज्योतिषियों के मतानुसार यह मूर्ति आसमान से टूटकर गिरे उल्कापिण्ड से निर्मित हुई है। एक अन्य कथा के अनुसार हनुमान जी ने अपनी बुद्धि चातुर्य से काम लेते हुये शनिदेव को लंकापति रावण के पैरों के नीचे से मुक्त कराया था एवं कई वर्षो तक दबे होने के कारण शनिदेव दुर्बल हो चुके थे। लंका दहन हेतु शनिदेव ने बताया था कि जब तक वे लंका में रहेंगे तब तक दहन नहीं हो सकता है एवं वे इतने दुर्बल हैं कि उनका चलना मुश्किल है। अतः हनुमान जी से निवेदन करने पर हनुमान जी ने शनिदेव को पूरी ताकत से भारत भूमि पर फैका एवं शनिदेव मुरैना जिले के ऐंती ग्राम के पास स्थित एक पर्वत पर जा गिरे, जिसे शनि पर्वत (ऐंती पर्वत) कहा जाता है। शास्त्रों में वर्णित है कि शनि पर्वत पर ही शनिदेव ने घोर तपस्या कर शक्ति एवं बल प्राप्त किया।

श्री शनिदेव मंदिर, शनिश्चरा, ऐंती मुरैना का इतिहास

त्रेता काल का शनि मंदिर

शनि मंदिर का इतिहास

शनि मंदिर पर शनिदेव की मूर्ति स्थापना, चक्रवर्ती महाराज विक्रमादित्य ने की थी एवं विक्रमादित्य ने ही शनिदेव की प्रतिमा के सामने हनुमान जी की मूर्ति की स्थापना करवाई थी। सन् 1808 ई. में तत्कालीन शासक श्री दौलतराव सिंधिया द्वारा यहां जागीर लगाई थी। इस प्रकार का शिलालेख मंदिर में लगा हुआ है। शनि पर्वत (शनिश्चरा पहाड़ी) निर्जन वन में स्थापित होने से विशेष प्रभावशाली है। यह भी कहा जाता है कि शनि सिंगनापुर (महाराष्ट्र) में स्थापित शिला को शनिश्चरा पहाड़ी से ही ले जाकर स्थापित किया गया था।

शनि मंदिर की विशेषता

शनि मंदिर के समीप ही पौड़ी वाले हनुमान जी की जमीन में लेटी हुई व उभरी हुई प्रतिमा है। सम्पूर्ण शनिश्चरा पहाड़ी एवं इसके आसपास का क्षेत्र सिद्ध क्षेत्र है, जिसका अनुभव भक्तों व श्रद्धालुओं को होता है।

शनिमंदिर में पहाड़ी से अनवरत गुप्त गंगा की धारा निकल रही है, एवं उक्त स्थान पर निर्मित गुफाओं में संत लोग तपस्या करते थे। इस बात के प्रमाण भी वर्तमान में दिखाई देते है। शनि मंदिर के अंदर स्थापित श्री राधाकृष्ण मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है एवं 6 जून 2011 को श्री राधाकृष्ण की नई प्रतिमायें स्थापित की गई है।

मंदिर के आसपास ही नवी, ग्यारहवी शताब्दी के मुरली मनोहर मंदिर, बटेश्वरा, पढ़ावली, मितावली, ककनमठ और कुन्तलपुर पुरातात्विक व धार्मिक महत्व के मंदिर और स्थान है। जिन्हें भी दर्शनीय व पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

श्री शनिदेव, सुख-शांति, यश, वैभव, धन-सम्पत्ति, पद-प्रतिष्ठा के प्रदाता है। आइये इस देवस्थान का दर्शन कर इसके विकास में अपना अमूल्य योगदान दें।

प्रस्तुति
मोनिका माहौर

दलित उत्पीड़न की घटनाओं के विरोध में माकपा ने धरना देकर जताया विरोध, दिया ज्ञापन

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

मुरैना। जिले में तेजी से बढ़ रही दलित उत्पीड़न की घटनाओं पर विरोध प्रकट करते हुए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी एवं दलित शोषण मुक्ति मंच के बैनर तले नेहरू पार्क पर धरना देकर मुख्यमंत्री के नाम और स्थानीय प्रशासन के नाम ज्ञापन दिया गया।

धरना स्थल पर हुई सभा को संबोधित करते हुए मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के राज्य सचिव मंडल सदस्य अखिलेश यादव ने कहा कि दलित उत्पीड़न की घटनाएं भाजपा के राज में तेजी से बढ़ी है। आम आदमी अपने आप को असुरक्षित महसूस कर रहा है। त्वरित कार्रवाई नहीं होने से अपराधियों के हौसले बुलंद हैं। उन्होंने इस स्थिति पर कड़ा आक्रोश प्रकट किया। धरनार्थियों को माकपा नेता, किसान सभा के प्रदेश अध्यक्ष अशोक तिवारी ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मुरैना जिले में दलित उत्पीड़न की स्थिति बहुत ही खराब है, जुल्म की इंतहा हो गई है। विरोध करने पर महिलाओं की नाक तक काट दी जाती है। इसी तरह से दलितों की मौत पर कोई कार्रवाई नहीं होती है। बारात निकालना भी मुश्किल हो गया है। उन्होंने इस तरह की घटनाओं पर आक्रोश प्रकट करते हुए उत्पीड़न की घटनाएं रोकने और कार्यवाही करने तथा आगामी दिनों में कार्यवाही नहीं होने पर आंदोलन तेज करने की अपील आमजनों से की।

इस दौरान कैलारस में गयाराम सिंह धाकड़ के नेतृत्व में ज्ञापन दिए गए तथा सबलगढ़ में माकपा जिला सचिव मुरारी लाल धाकड़ के नेतृत्व में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व और अनुविभागीय अधिकारी पुलिस को ज्ञापन प्रस्तुत किए गए।

शनि मेले में रेल विभाग चलायेगा दो ट्रेन

मुरैना। 29 मार्च को शनिश्चरी अमावस्या है। शनिश्चरी अमावस्या पर लाखों की संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की उम्मीद है। श्रद्धालुओं को आवागमन में असुविधा न हो, इसलिये कलेक्टर अंकित अस्थाना ने 28 मार्च और 29 मार्च को स्पेशल ट्रेन चलाने का आग्रह रेल विभाग को किया था। रेल विभाग ने दो ट्रेन चलाने की अनुमति दी है। जिनमें ट्रेन नंबर 51887/ 51888/ 51889 और 51890 ये ट्रेन 28 से 30 मार्च तक चलेंगी, जिनमें 04 अतिरिक्त जनरल कोच रहेंगे। इसी प्रकार ट्रेन नंबर 11903/11904 वीजीएलजे ईटीडब्ल्यू दैनिक एक्सप्रेस का एसएसी पर अतिरिक्त दो अस्थाई ठहराव 28 से 30 मार्च तक रहेगा। इसके अलावा एक रैक स्पेयर में ग्वालियर में रखा गया है।

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी एवं उप वनमण्डलाधिकारी, उपवनमण्डल शिवपुरी (म.प्र.)
Mob. - 9424794738, Email id - sdoftshivpuri@mp.gov.in

//सूचना//

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि, वन परिक्षेत्र सतनवाड़ा के अंतर्गत आने वाली बीट करियारा के कक्ष क्र. आर.एफ. 610 में बहुत सारे व्यक्तियों द्वारा लगभग 20 हेक्टेयर वन क्षेत्र में 70 नग सतरुखा प्रजाति के वृक्षों की अवैध कटाई एवं साफ-सफाई कर अतिक्रमण के प्रयास में एक मोटरसाइकिल रजिस्ट्रेशन क्र. MP31MF7561, 06 नग कुल्हाड़ी, 02 नग सोलर प्लेट, 02 नग हेलमेट, 07 नग तीर, 06 नग कट्टी, 02 नग वाल्टी, 01 नग तस्सल, 01 नग तवा, 01 नग लोटा जप्त किया जाकर पी.ओ.आर. क्र. 303/25 दि.19.04.2022 को पंजीबद्ध किया गया था।

उक्त जप्तशुदा मोटर साइकिल एवं सामग्री की जप्ती के संबंध में भारतीय वन अधिनियम 1927 की धारा 26(1) क,ड़,च,ज एवं 66(क) के अंतर्गत राजसात की कार्यवाही प्रचलित है। उक्त वाहन के स्वामी एवं हितबद्ध व्यक्ति को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि उक्त वाहन के संबंध में अपना पक्ष समर्थन सूचना प्रकाशन के 10 दिवस के अंदर प्रस्तुत करें। अनुपस्थिति क्री दशा में एक पक्षीय कार्यवाही की जावेगी।

(एल्विन बर्मन)
प्राधिकृत अधिकारी एवं
उपवनमण्डलाधिकारी
उप वनमण्डल शिवपुरी (म.प्र.)

G24877/24

हर एक महिला को अपने सपने साकार करने का स्वर्णिम समय : भोपाल महापौर मालती राय

कलचुरी होली मिलन व नारीशक्ति सम्मान समारोह में भजन व फूलों की होली ने बांधा समां

-हिन्दुस्तान एक्सप्रेस न्यूज-

ग्वालियर। भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय ने कलचुरी महिला मंडल ग्वालियर द्वारा आयोजित होली मिलन एवं नारीशक्ति सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से कहा कि हर एक महिला को अपने-अपने सपने साकार करना चाहिए और अपने सपने को पाने के लिए जी जान से मेहनत करना चाहिए। क्योंकि अब समय स्वर्ण युग का समय है और साथ ही खुशी की बात है कि अब महिला व पुरुष में भेदभाव खत्म भी हो रहा है।

महापौर श्रीमती राय ने समाज बंधुओं और बहनों को होली मिलन समारोह की शुभकामनाएं दीं, वहीं फूलों की होली में भाग लेकर उन्होंने वाहवाही लूटी। वहीं इस अवसर पर ग्वालियर महापौर श्रीमती शोभा-सतीश सिकरवार ने कहा कि होली व रंग पंचमी त्योहार सिर्फ रंगों का त्यौहार ही नहीं बल्कि समाज को जोड़ने और भाईचारे बढ़ाने का है। हमें अपने बुजुर्गों से प्रेरणा लेनी चाहिए ताकि एक आदर्श नागरिक भी बन सके।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय अध्यक्ष दिल्ली से आयीं श्रीमती पूनम चौधरी ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम एक पाठशाला की तरह हैं जो हमें अच्छे से अच्छा कार्य करना सिखाते हैं।

विशिट अतिथि पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि त्योहार सामाजिक समरसता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं और इस तरह के कार्यक्रम होते रहना चाहिए। इसके साथ ही कलचुरी महिला मंडल द्वारा आयोजित कार्यक्रम में संगीता, खुशबू गुप्ता आदि ने भी विचार व्यक्त कर सभी को होली की शुभकामनाएं दीं। संभागीय अध्यक्ष श्रीमती संगीता गुप्ता, संरक्षक आशा शिवहरे, जिलाध्यक्ष श्रीमती गायत्री शिवहरे, महासचिव रेनू शिवहरे का कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनके प्रयासों से यह कार्यक्रम सम्पन्न हो पाया। कार्यक्रम का समापन नारीशक्ति सम्मान समारोह एवं दिल्ली से आए रासलीला मंडली के भजनों के साथ हुआ। यह कार्यक्रम कलचुरी महिला मंडल द्वारा जीवाजी क्लब में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर श्रीमती पुष्पलता पावनी जायसवाल अभा हैहय कलचुरी महासभा राष्ट्रीय महामंत्री दिल्ली, अतिथि श्रीमती कमलेश राय अखिल भारतवर्षीय हैहय कलचुरी महासभा मध्य प्रदेश अध्यक्ष भोपाल, श्रीमती अंजना-हरीबाबू शिवहरे पार्षद नगर निगम ग्वालियर, श्रीमती रेखा-चंदन राय पार्षद नगर निगम ग्वालियर, श्रीमती प्रियंका शिवहरे अध्यक्ष नगर परिषद कोलारस, श्रीमती खुशबू गुप्ता प्रदेश मंत्री भाजपा महिला मोर्चा, श्रीमती सीमा शिवहरे अध्यक्ष महिला मोर्चा भाजपा जिला शिवपुरी, श्रीमती आरती शिवहरे अध्यक्ष महिला मानवाधिकार आयोग जिला धौलपुर, श्रीमती भारती शिवहरे पार्षद कोलारस, श्रीमती आशा शिवहरे पार्षद मुरैना, मुरैना जिलाध्यक्ष अनीता शिवहरे, शिवपुरी जिलाध्यक्ष प्रियंका शिवहरे,डबरा अध्यक्ष नीलम शिवहरे, भिण्ड जिलाध्यक्ष हेमलता शिवहरे, श्रीमती कामिनी शिवहरे कोलारस अध्यक्ष, नीति शिवहरे, श्रीमती रविता राय घासमंडी ग्वालियर, श्रीमती छाया राय घासमंडी ग्वालियर, संरक्षक आशा शिवहरे, श्रीमती रूपलता गुप्ता, श्रीमती कमला शिवहरे, श्रीमती मीरा शिवहरे, श्रीमती सुमन गुप्ता, श्रीमती कल्पना शिवहरे, श्रीमती सुनीता शिवहरे, श्रीमती सुरेखा शिवहरे, श्रीमती उर्मिला शिवहरे संभागीय अध्यक्ष, श्रीमती संगीता गुप्ता, जिलाध्यक्ष श्रीमती गायत्री शिवहरे, महासचिव श्रीमती रेनू शिवहरे, उपाध्यक्ष श्रीमती ममता पवैया, श्रीमती सोनम राय, श्रीमती अंजना शिवहरे पार्षद, पार्षद श्रीमती पायल शिवहरे, श्रीमती हेमा शिवहरे, संयुक्त सचिव प्रीति राय, अनीता गुप्ता, सह सचिव वंदना गुप्ता, हेमलता शिवहरे, सुषमा शिवहरे लोहिया बाजार, कोषाध्यक्ष सुषमा शिवहरे रॉयल इन होटल, सह कोषाध्यक्ष किरण शिवहरे, रानी शिवहरे प्रवक्ता, कीर्ति गुप्ता, सीता शिवहरे, गीता शिवहरे संगठन प्रभारी, गीता राय, भावना शिवहरे, निधि जायसवाल, ममता शिवहरे, कार्यकारी सदस्य श्रीमती उर्मिला शिवहरे, माला राय, साधना शिवहरे, अनुराधा शिवहरे, संगीता शिवहरे, मधु शिवहरे, करुणा शिवहरे, पूजा शिवहरे, मूर्ति शिवहरे, सीता शिवहरे, पूजा-अमर शिवहरे, ममता कम्पू, मोहिनी शिवहरे, वैशाली शिवहरे, निधि शिवहरे, प्रतिभा शिवहरे, रूपाली शिवहरे, शैफाली शिवहरे, सुनीति शिवहरे, कविता शिवहरे, संध्या गुप्ता, रजनी शिवहरे सहित बड़ी संख्या में डबरा, मुरैना, मुरार, ग्वालियर, भिंड, शिवपुरी एवं दूर-दूर से कलचुरी महिला मंडल की महिलाएं मौजूद रहीं।

दिल्ली की विक्की सुनेजा एण्ड पार्टी के कलाकारों ने दीं शानदार प्रस्तुतियां

आयोजन के तहत दिल्ली की विक्की सुनेजा एण्ड पार्टी के कलाकारों ने बहुत ही आकर्षक प्रस्तुतियां मंच पर दीं। विशेषकर राधा-कृष्ण की जोड़ी द्वारा जो प्रस्तुति दी गई वह प्रशंसनीय थी। उपस्थित लोगों ने कलाकारों का तहेदिल से अभिनंदन किया। इसके अलावा अन्य कलाकारों ने भी अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम के तहत फूलों की होली खेली गई। इस अवसर पर अनेक लोग मौजूद थे।

समाज के पुरुष वर्ग की उपस्थिति

उक्त कार्यक्रम में कलचुरी कलार महासभा ग्वालियर के जिलाध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र शिवहरे, महासचिव श्री रघुवीर राय, मुख्य संरक्षक सेठ लक्ष्मीनारायण शिवहरे, चन्द्रप्रकाश शिवहरे प्रधान संपादक दैनिक हिन्दुस्तान एक्सप्रेस, देवेन्द्र पवैया, अन्नू शिवहरे, धर्मेन्द्र शिवहरे, हरीबाबू शिवहरे, धर्मवीर राय, संजीव शिवहरे आदि की उपस्थिति रही।

स्वामित्वधिकारी प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे के लिए मै. गुरुकृपा प्रकाशन प्रेस ,टी.आई.टी कॉम्पलेक्स मुरैना से मुद्रित एवं हिन्दुस्तान एक्सप्रेस परिसर नवीन नगर निगम मुख्यालय के सामने सिटी सेंटर ग्वालियर (म.प्र.) से प्रकाशित। R.N.I. No. MP HIN/2007/ 18763
सम्पादक चन्द्रप्रकाश शिवहरे, स्थानीय संपादक संजय त्रिपाठी सभी विवादों का न्याय क्षेत्र ग्वालियर न्यायालय होगा। फोन: 0751-2234001 मो. 94251-26060, 9425360435